अप्रैल - २०१० किमंत रू. ५/-

श्री स्वामिनारायण

मासिक अंक

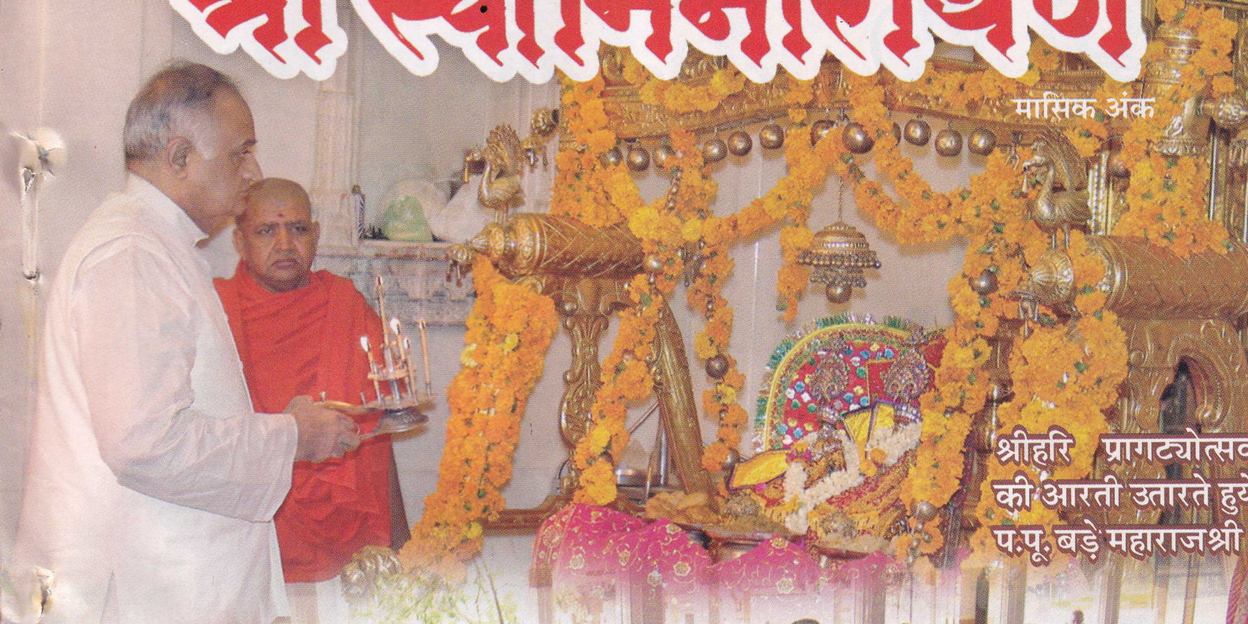

श्रीहरि प्रागट्योत्सव की आरती उतारते हुये प.पू. बड़े महाराजश्री

प.पू. बड़े महाराजश्री के ६६ वें प्रागट्योत्सव प्रसंग पर प.पू. लालजी महाराजश्री की उपस्थिति में पू. संत-हरिभक्त आरती उतारते हुये।

प्रकाशक : श्री स्वामिनारायण मंदिर अहमदाबाद-३८०००१.

॥ શ્રી સ્વામિનારાયણો વિજયતેતરામ્ ॥

શ્રી નરનારાયણ દેવ નૂતન મંદિર મહોત્સવ

નિમંત્રણ

શુભારંભ
તા. ૧૫-૦૫-૨૦૧૦,
વૈશાખ સુદ-૨

પૂર્ણાહુતિ
તા. ૨૩-૦૫-૨૦૧૦, વૈશાખ સુદ-૧૦

તા. ૧૪-૦૫-૨૦૧૦ શ્રીનરનારાયણદેવ વિશ્વયુવા સત્સંગ સંમેલન – બપોરે ૩:૦૦ કલાકે પોથીયાત્રાનો પ્રારંભ

તા. ૧૫-૦૫-૨૦૧૦ પારાયણના પ્રથમ દિને દીપ પ્રાગટ્ય

તા. ૧૬-૦૫-૨૦૧૦ ૧૮૮ કુંડી મહાવિષ્ણુયાગ પ્રારંભ

તા. ૧૭-૦૫-૨૦૧૦ આંતરરાષ્ટ્રીય સમૂહ મહાપૂજા–શ્રીગણપતિ, હનુમાનજી, સુર્યનારાયણ, શિવપાર્વતી ની પ્રતિષ્ઠા

તા. ૧૮-૦૫-૨૦૧૦ નૂતન મંદિર લોકાર્પણ વિધિ. શ્રી સ્વામિનારાયણ ભગવાને પ્રતિષ્ઠિત શ્રીનરનારાયણ આદિ ભગવત્સ્વરૂપોની નૂતન મંદિરમાં પધરામણી, મહાભિષેક, અન્નકૂટદર્શન.

તા. ૧૯-૦૫-૨૦૧૦ જીર્ણ પ્રસાદી મંદિરમાં નૂતન ભગવત્સ્વરૂપોની પ્રાણ પ્રતિષ્ઠા.

તા. ૨૦-૦૫-૨૦૧૦ વિવિધ આકૃતિઓથી સુશોભિત વિવિધ રથોમાં શ્રીઠાકોરજીની ભવ્યાતિભવ્ય નગરયાત્રા.

તા. ૨૨-૦૫-૨૦૧૦ શ્રી ઠાકોરજીના વેદવિહિત અષ્ટ રાજોપચારથી વૈદિક મંત્રોચ્ચાર સાથે પૂજન

ઉત્સવનાં પ્રત્યેક પ્રસંગો પ.પૂ.ધ.ધુ. ૧૦૦૮ આચાર્ય શ્રી કોશલેન્દ્રપ્રસાદજી મહારાજશ્રીના વરદ્ હસ્તે થશે.

વડતાલગાદીના પ.પૂ.ધ.ધુ. ૧૦૦૮ આચાર્ય શ્રી રાકેશપ્રસાદજી મહારાજશ્રી દર્શન આશીર્વાદ પાઠવશે.

આ પ્રસંગે સંપ્રદાયના વિદ્વાન સંતો પધારી દર્શન–આશીર્વાદ આપશે, સનાતન ધર્મના જગદ્ગુરુ શ્રીરામાનુજાચાર્ય, શ્રીશંકરાચાર્ય, શ્રીવલ્લભાચાર્યનાં ગાદિપતિઓ તથા દેશભક્તો તથા વિવિધ ક્ષેત્રે લોક પ્રતિષ્ઠિત રાજકીય પુરૂષો પધારશે.

દરરોજ રાત્રે ભક્તિ સંગીતના કાર્યક્રમો યોજાશે જેમાં અનૂપ જલોટા જેવા પ્રખ્યાત સંગીતજ્ઞ પુરૂષો પધારશે.

વેદપાઠી બ્રાહ્મણો ધ્વારા ચતુર્વેદ પારાયણ, સંપ્રદાયના નંદ સંતોનું સાહિત્ય, વાંચન અને પ્રદર્શન.

શ્રી સ્વામિનારાયણ મહામંત્રની અખંડ ધૂન. લેખન અને પ્રદર્શન, ૧૦૮ સંહિતા પાઠ, અદ્યતન ટેક્નોલોજીનું આર્કષક 3D દ્વારા શ્રીહરિ ચરિત્ર દર્શન તેમજ ભારતીય નૃત્ય, રાસોત્સવ, સંપ્રદાયના ઈતિહાસિક રૂપકોનું આયોજન કરવામાં આવેલ છે. શ્રી નરનારાયણ દેવ મેડીકલ કેમ્પ ૨૦૧૦નાં કુલ ૮ કેમ્પનું આયોજન સફળ રહ્યુ.

આ દિવ્ય મહોત્સવમાં આપ સૌને સપરિવાર પધારવા નેહ નિતરતું નિમંત્રણ પાઠવીએ છીએ.

નિમંત્રક : સ.ગુ. મહંત પુરાણી સ્વામી શ્રી ધર્મનંદનદાસજી

:: આયોજક ::
શ્રી સ્વામિનારાયણ મંદિર, ભુજ-કચ્છ,
ફોન. : (૦૨૮૩૨) ૨૫૦૨૩૧/૩૩૧

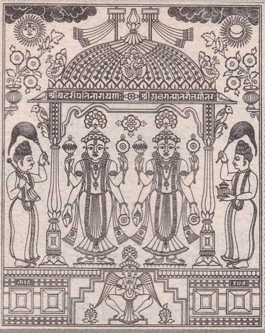

संस्थापक
श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति
प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री १००८
श्री तेजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री
श्री स्वामिनारायण म्युजियम
नारायणपुरा, अहमदाबाद.
फोन : २७४१९५९७ - ९८२५३०९५९७
फोक्स : २७४१९५९७
www.swaminarayanmuseum.com
दूर ध्वनि
२२१३३८३५ (मंदिर)
२७४७८०७० (स्वा. बाग)
फेक्स : ०७९-२७४५२१४५
श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति
प.पू.ध.धु. आचार्य १००८
श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्रीकी आज्ञा से
तंत्रीश्री
स.गु. शास्त्री स्वामी हरिकृष्णदासजी (महंत स्वामी)
पत्र व्यवहार
श्री स्वामिनारायण मासिक कार्यालय
श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर,
अहमदाबाद-३८० ००१.
दूर ध्वनि : २२१३२१७०, २२१३६८१८.
फोक्स : २२१७६९९२
www.swaminarayan.info
www.swaminarayan.in
पतेमें परिवर्तन के लिये
E-mail : manishnvora@yahoo.co.in

मूल्य
प्रति वर्ष ५०-००
वंशपारंपरिक
देश में ५०१-००
विदेश १०,०००-००
प्रति कोपी ५-००

श्री स्वामिनारायण

श्री नरनारायणदेव पीठस्थान मुखपत्र

वर्ष - ३ अंक : ३६ अप्रैल-२०१०

अ नु क्र म णि का

१.	अस्मदीयम्	२
२.	प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के कार्यक्रम की रुपरेखा	३
३.	रहो एकादश निमय में, करो श्रीहरि पद प्रीति	४
४.	निष्कामी व्रतधारी परम भक्त मूलजी खांट	५
५.	प.पू. बड़े महाराजश्री की अमृतवाणी	६
६.	प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की अमृतवाणी	८
७.	प.पू. बड़े महाराजश्री की श्री स्वामिनारायण म्युझियम के प्रचारार्थ यु.एस.ए. धर्मयात्रा	९
८.	आध्यात्मिक मार्ग में आचार्य श्री अनिवार्य है	१०
९.	प.पू. लालजी महाराज १०८ श्री व्रजेन्द्रप्रसादजी की प्रथम विदेश प्रवास तथा प.पू. गादीवालाश्री एवं श्रीराजा एवं श्री राजा का केनेडा प्रवास	११
१०.	प.पू. लालजी महाराजश्री एवं धर्मकुल का टोरोन्टो केनेडा का धर्मप्रवास	१२
११.	श्रीजी महाराज द्वारा बताया गया दुःख निवृत्ति का मार्ग	१३
१२.	प.पू. बडे महाराजश्री का ६६ वां प्रागट्यत्सव धूमधाम से मनाया गया	१४
१३.	भक्ति सुधा	१५
१४.	सद्संग समाचार	१८

सम्पादकीयम

इस संसार का ऐसा क्रम है कि अधिकता किसी को अच्छी नहीं लगती। सभी उससे दूर रहते हैं, उसका त्याग करते हैं। व्यर्थ का समझकर छोड़ देते हैं। जो निष्प्रयोजन वस्तु होती हैं उसे अधिक की उपमा देते हैं। परमात्मा की यह सृष्टि कालरचना (समय गणना) के अनुसार प्रति ४ वर्ष बाद १ मास बढ़कर अपने हिन्दू कलन्डर में अधिकमास आता है। प्रति ४ वर्ष में १ मास बढकर आवे तो वर्ष में १२ महीने के बदले में १३ महीना होता है। इस अधिक मास का सभीने त्याग किया। इसलिये इसका नाम मलमास रखा गया जिससे इसे कोई स्वीकार नहीं किया। इसलिये उसने परमात्मा की शरणागति स्वीकार कर लिया। वह परमात्मा से निवदेन किया कि हे परमात्मा ? आपका ही बनाया हुआ मैं, मुझे संसार में स्वीकार नहीं किया जा रहा है। अब हम क्या करें ? हम कहाँ जाये ? हमे कौन आश्रय देगा ? यह विन्ती सुनकर प्रभु बहुत प्रसन्न हुये। जब किसी का कोई नहीं होता और वह प्रभु की शरणागति में जाता है तो परमकृपालु परमात्मा उसे स्वीकार करते हैं। उसी समय प्रभु ने वरदान दिया आज से हम तुम्हें स्वीकार करते हैं ? उसी समय से मलमास हटकर प्रभु के नाम से जुड़कर पुरुषोत्तम मास पड़ा। भगवानने वरदान दिया कि "अधिकस्याधिकं फलम्" इस अधिकमास में जो भजन-भक्ति, दान-पुण्य, सेवा करेगा उसे अनंत गुना अधिक फल मिलेगा। ऐसा यह अधिकमास जब हमें मिला है तो अपने श्री नरनारायणदेव के मंदिर में पाटोत्सव के साथ अनेक दिव्य उत्सव मनाये जायेंगे। इसके साथ ही विविधमंदिर में भी इस निमित्त सत्संग, भजन भक्ति, कथा-पूजा तथा नानाविधउत्सव के दर्शन होंगे। इसलिये हम सभी का इस अधिकमास में अपने इष्टदेव को प्रसन्न करने के लिये तन, मन, धन अर्पित करके आत्म समर्पित भाव से भजन भक्ति, सत्संग करलेने में कल्याण है। यही अपने मनुष्य देह की सार्थकता हैं।

तंत्रीश्री (महंत स्वामी)
शास्त्री स्वामी हरिकृष्णदासजी का
जयश्री स्वामिनारायण

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के कार्यक्रम की रुपरेखा
(मार्च-२०१०)

१. कुंडाल गाँव में श्री दिलीपकुमार नाथालाल पटेल के यहाँ पज्ञ प्रसंग पर पदार्पण।
अन्य हरिभक्तों के यहाँ पदार्पण।

२. श्री नरनारायण जयंती पुष्पदोलोत्सव प.पू. लालजी महाराजश्री के साथ धूमधाम से सम्पन्न हुआ।
अन्य हरिभक्त के यहाँ पदार्पण, सोला।

३. श्री महेशभाई लालजी भाई पटेल के यहाँ पदार्पण, शीलज।

४. नरनारायण ज्वेलर्स में पदार्पण इन्डिया कोलोनी।

७. बालासिनोर गाँव में श्री नवीनचन्द्र ओच्छवलाल काछिया के यहाँ परायण प्रसंग पर पदार्पण।

८. जेतलपुर धाम सर्वोपरि श्री रेवती बलदेवजी हरिकृष्णमहाराज के पाटोत्सव अभिषेक अपने वरद् हाथों से संपन्न किये।

९. श्री भूपेन्दभाई बोराट के यहाँ महापूजा प्रसंग पर पदार्पण, सेटेलाईट।
श्री भरतभाई मथुरदास पटेल के यहाँ पदार्पण, घाटलोडिया।

११ से २३ अमेरिका टेकसास स्टेट के ह्युस्टन (आई.एस.एस.ओ.) श्री स्वामिनारयाण के दशाब्दी महोत्सव तथा बायर मंदिर के खात विधिप्रसंग पर पदार्पण।

२४. रामनवमी सर्वावतारी श्री स्वामिनारायण भगवान का प्रागट्योत्सव तथा अक्षरभुवन घनश्याम महाराज का पाटोत्सव अभिषेक अपने वरद् हाथों से किये।

२५. श्री स्वामिनारायण मंदिर नवावाडज सुवर्ण जयंती महोत्सव अपने वरद् हाथों से संपन्न किये।

२७. श्री स्वामिनारायण मंदिर कड़ी चरणारविंद के जीर्णोद्धार प्रसंग पर आयोजित महापूजा प्रसंग पर पदार्पण।

२९. श्री स्वामिनारायण मंदिर सरोडा (धोलका देश) मूर्ति प्रतिष्ठा प्रसंग पर पदार्पण।

३०. श्री स्वामिनारायण मंदिर कांकरिया हनुमान जयंती प्रसंग पर पदार्पण।

३१. से १४ अप्रैल ओस्ट्रेलिया एवं न्युझिलेन्ड धर्म-प्रवास हेतु पदार्पण।

श्री स्वामिनारायण मासिक के सदस्यो को सूचना

श्री स्वामिनारायण मासिक पत्रिका की वार्षिक सदस्यता शुल्क भेजने वाले सदस्यों को सूचित किया जाता है कि आपकी सदस्यता शुल्क पूर्ण होने की अवधिमासिक पत्रिका में प्लास्टिक कवर के ऊपर छपा हुआ आता है, उसे देख लेना चाहिये।

रहो एकादश निमय में, करो श्रीहरि पद प्रीति

- शा. स्वा. अभयप्रकाशदास गुरु महंत स्वा. देवप्रकाशदासजी (नारायणघाट)

भगवान स्वामिनारायण के हम सभी सत्संगी कहलाते हैं। लेकिन सच्चा सत्संगी कौन है यह जानना जरुरी है। भगवान स्वामिनारायणने वचनामृत में कहा है कि नियम, निश्चय, पक्ष जो रखे वही सच्चे सत्संगी हैं। हमें जो श्रीहरि मिले हैं वे ही पूर्ण पुरुषोत्तम है। वे ही सर्व जगत के नियन्ता है। ऐसा जब निश्चय होगा तभी कल्याण होना सम्भव है। श्रीहरि वचनामृत में कहते हैं कि एकवार जब यह निश्चय होगया कि यह निम्ब वृक्ष है फिर बदलता नहीं हैं। चाहे कितने ही लोग आकर कहें कि यह निंब वृक्ष नहीं है तो भी कोई फर्क नहीं होता। इसी तरह परमेश्वर में भी एकबार निश्चय हो जाये तो परिवर्तन नहीं होता। भगवान में एकबार प्रीति हो गयी, तो हो गयी। शबरी को प्रीति अपने प्रभु में हुई तो सारा जीवन राममय बनकर उन्हीं की प्रतीक्षा में लगी रही। भगवान के प्रति भक्त का भाव जगता है, उमड़ता है तो वह रोके नहीं रुकता तन्मय भाव से अपने इष्ट में सदा मशगुल हो जाता है।

तुलसीदासजी कहते है कि -

तुलसी जिनके मुखनसे भूले निकसे राम।
ताके पगड़ी पहनियां मेरे नतडी चाल ॥

इस तरह के भाव को ही पक्ष कहते हैं। भगवान में जब इस तरह का पक्ष हो तभी परिवर्तन सम्भव नहीं होता। परंतु नियम में तो इससे भी अधिक सावधानी की आवश्यकता होती है। जिस तरह तलवार को धारदार रखने के लिये सतत उपयोग में रखना आवश्यक है। ठीक इसी तरह नियम में भी सतर्कता आवश्यक है। यह समग्र सृष्टि, ब्रह्मांड, चन्द्र, तारा, नक्षत्र, सभी अपने नियम के अनुसार गति करते हैं। सभी अपने नियम में रहकर ही सुख का अनुभव करते हैं। लेकिन नियम में रहना बड़ा कठिन है। सभी से सम्भव भी नहीं है। जो नियम में रहते हैं अन्त में वे ही सुख का अनुभव करते हैं। जो मनमाना आचरण करते हैं वे दुःखी होते हैं। नियम में चलना तलवार की धार पर चलने की तरह हैं। शास्त्र में कहे अनुसार जो चलते हैं उन्हें थोड़ी तकलीफ अवश्य होती है लेकिन वे सुखी होते हैं। भजन भक्ति में भी नियम की आवश्यकता होती है। सत्संग में तो नियम की ही बात की गयी है। भगवान अपने भक्त के लिये जो नियम बताये है उसी का पालन करना हितावह है। हम सभी पर कृपा करके प्रभु ने शिक्षापत्री दी जिसमें करीब छसोबयालिस आज्ञा की है। उसमें भी इग्यारह विशेष प्रकार के नियम बताये।

भगवान स्वामिनारायण ने स.गु. प्रेमानंद स्वामीी आज्ञा की कि ऐसी प्रार्थना के पद बनाइये जिसमें इग्यारह नियम हों। जिसका प्रतिदिन गान किया जा सके।

महाराज की आज्ञा को शिरोधार्य करके प्रेमानंद स्वामीने जिन पदों की रचना की उन्हें हम प्रतिदिन गाते हैं।

''निर्विकल्प उत्तम अति निश्चय तव घनश्याम।''

इस पद में स्वामीने लिखा है।

सहजानंद महाराज के सब सत्संगी सुजान।
ताकु होय दृढ वर्तनो शिक्षापत्री प्रमान ॥

इसी बात की दृढता आगे बताते हुये कहते हैं कि -

सौ पत्री में अति बड़े, नियम एकादश होय,
ताकी विन्ती कहंत हुं, सुनियो सवचित प्रोय।''

शिक्षापत्री में जो नियम बताये है उन में इग्यारह नियम बहुत ही उपयोगी है, जो सारे सत्संग के लिये आवश्यक हैं:

हिंसा न करनी जंतु की परस्त्रिया संग को त्याग।
मांस न खावत मद्यकुं पीवत नहिं बड भाग्य ॥

इन्हीं इग्यारह नियम की आज्ञा करके महाराज ने सत्संग के साथ समाज का बड़ा उपकार किया है। इससे सामाजिक व्यवस्था सुदृढ होगी नैतिक और चारित्र्य दोष नहीं आयेगा।

निष्कामी व्रतधारी परम भक्त मूलजी खांट

- शा. रामकृष्णदास (आदरजवाला)

परमात्मा श्रीहरि को निष्कामी भक्त बहुत प्रिय हैं। निष्कामी अर्थात् जिन्हें किसी प्रकार की इच्छा न हो। दूसरा मतलब यह भी कि स्त्री आदि का आठ प्रकार से त्याग। काम-वासना जीतने के लिये भगवान बहुत सारे उपाय बताये हैं। श्रीजी महाराजने ग.प्र. ७३ वें वचनामृत में कहा है कि काम जीतना बहुत कठिन है। जिन्हें भगवान की उपासना का दृढ बल हो तथा पंचविषय से जो निर्वासनिक हो गये हों वे भी भगवान के प्रताप से निष्कामी हो जाते हैं। श्रीहरि संवत् १८७६ में अन्नकूट का उत्सव करने के लिये दंढाव्य देश के आदरज गाँव में पधारे थे।

श्रीजी महाराज को आदरज पधारने के लिये रतुजी खांट मूलजी खांट, बादरजी खांट, अरजणजी खांट तथा थाना खांट इत्यादि भक्त आमन्त्रण देने गये थे। नव वर्ष तक प्रतीक्षा के बाद महाराज दंढाव्य देश के आदरज गाँव के भक्तों को सुखी करने के लिये पधारे थे। यहाँ के गांव में महाराज अनेकों वार रुके और सत्संग किये। यहाँ के गाँव में एक विशाल सरोवर है जहाँ महाराज प्रतिदिन पांचसौ परम हंसो के साथ स्नान करने जाते थे। वहाँ खूब जलक्रीडा करते थे। सरोवर के किनारे एक इमली का वृक्ष था उस पर चढकर डाल पकड़कर पानी में कूदते और संत उन्हें पानी से स्नान कराते। पानी से बाहर आते ही संतो को समाधि लगजाती थी। बाद में महाराज संतो के साथ परम भक्त रतुजी खांट के दरबार में पधारते और विशाल सभा को सम्बोधित करते। आज सभी को आठ प्रकार के ब्रह्मचर्य पालन पर विशेष बल देते हुये बताये कि इससे बड़ा कोई निष्कामव्रत नहीं है। मूलजी ब्रह्मचारी की सेवा महाराज को बहुत अच्छी लगती थी। इसकी चर्चा वचनामृत में भी किये हैं। महाराज के मुख से निष्कामव्रत में ब्रह्मचर्य खूब उपयोगी है यह सुनकर सभी इस वात के लिये कटिबद्ध हो गये।

इस सभा में आदरज गाँव के रतुजी खांट के भाई मूलजी खांट भी थे महाराज की बात को सुनकर विचार करने लगे कि यदि भगवान को पाना हो तो ब्रह्मचारी होकर आजीवन भगवान की भजन करना पड़ेगा। अनंत कोटि ब्रह्मांड के अधिपति हम सभी के कल्याणार्थ तुच्छ जीव की तरह भ्रमण कर रहे हैं। इसलिये हम सभी का क्या कर्तव्य है यह समझने लायक है। वे तुरंत ही आजीवन ब्रह्मचर्य रहने की प्रतिज्ञा कर लिये और परस्त्री को अपनी माता के समान मानकर जीवन यापन करेंगे। तुलसीदासजी के शब्द उनके जीवन में उतर गया - परस्त्री को माता माने, परधन को पत्थर माने। मूलजी

(अनुसंधान नं. १७ पर)

प.पू. बड़े महाराजश्री की अमृतवाणी

संकलन : गोरधनभाई वी. सीतापरा (हीरावाडी-बापुनगर)

कांकरिया मंदिर के ब्रह्मभोजन प्रसंग पर : (ता. १९-२-१०) भूमि का भी एक प्रारब्धहोता है । कांकरिया की इस भूमि पर सर्वावतारी श्रीहरि के चरण रज पड़ने से यह भूमि तीर्थ जैसी होगयी है । इसके अलांवा अयोध्याप्रसादजी महाराजश्रीने इस भूमि पर बाल स्वरुप हनुमानजी की स्थापना करके इस भूमि को और भी शक्तिशाली बना दिया । अशोकभाई भट्ट विधान सभा अध्यक्ष यहाँ बैठे हैं । इसलिये एक वात कहता हूँ । राजकार्य में जिस तरह हथियारों की जरुरत होती है उसी तरह हमारे यहाँ धर्मकार्य में भी हथियारों की जरुरत होती है । लेकिन हमारे हथियार किसी को लगते नहीं है । मात्र डराने के लिये होते हैं । हमारी म्युझियम में अभी एक प्रसादी का भाला आया है । ऐसे भाला - तलवार इत्यादि अस्त्र शस्त्र महाराज के समय में पार्षद रखते थे । कुछ ब्राह्मण ऐसे होते जिन्हे इस तरह के ब्रह्मभोजन में महाराज भाला दिखाकर लड्डू खिलाते थे । महाराज जीव का कल्याण जबरदस्ती करते थे । श्रीजी महाराज की प्रसादी का अन्न पेट में जाय तो शुभ विचार आने लगता है।

महाराज के गुण, धर्म, प्रताप से प्रभावित होकर विशप हेबर नामक एक पादरी इन्गलेन्ड से नड़ीयाद मिलने आया था । उस समय महाराज के साथ २०० जितने हथियार धारी पार्षद थे । विशप हेबर यह देखकर महाराज से पूछा की आप इन शस्त्रधारियों को क्या पुरस्कार देते हैं । महाराज ने कहा ये सभी सेवक अपने अपने गाँव के राजा हैं तो भी बिना किसी पुरस्कार के अन्तिम श्वास तक लड़ने के लिये कटिबद्ध है विशप हेबर को भी अंग्रेज सरकारने पैसेवाले सैनिक दिये थे लेकिन पादरी को किसी सैनिक के नाम का पता नहीं था। जब कि महाराज को सभी पार्षदो के नाम मालुम थे । बिशप हेबर को हुआ कि इन दोनो सैनिको में युद्ध हो जाय तो स्वामिनारायण के सेवकों की जीत होगी । इसका कारण यह कि स्वामिनारायण के सेवक स्वार्थ बिना सेवा करते हैं । बिशप हेबर को महाराज के प्रताप का ख्याल था । थोड़ा भाव भी ऐश्वर्य के प्रति होने से महाराज बिशप हेबर को सत्संग में किसी के घर जन्म दिलाकर कल्याण तो अवश्य करेंगे । इसी तरह से ब्राह्मणों को भोजन करने के पीछे यही उद्देश्य होता था । आज भी उसी परम्परा का निर्बाहक यह उत्सव होता रहता है । जो भी इस उत्सव में दान देकर सहभागी हुये हैं वे सभी धन्यवाद के पात्र है।

एप्रोच (बापूनगर) मंदिर पंचम पाटोत्सव प्रसंग पर (ता. १९-२-१०) महाराज के शब्द याद करें । महाराज कहते थे कि यह जो पुरुषार्थ रात दिन हम करते हैं वह सत्संग के हित के लिये करते हैं । इसमें हमारा कोई स्वार्थ नहीं है । इसी तरह आज भी हम जो कार्य करते हैं वह मात्र महाराज की प्रसन्नता के लिये, सत्संग के हित के लिये करते हैं । देश-विदेश में बहुत सारे म्युझियम हैं वे सभी निर्जीव हैं । एक वार दर्शन करने के बाद पुन: दर्शन करने का उत्साह नहीं रहता । यह म्युझियम अनंत जीवात्माओं के कल्याणार्थ एक धाम बनाया जा रहा है । कारण यह कि इस म्युझियम में जो भी वस्तु हैं वे परमात्मा से

सम्बन्धित हैं। एक वस्तु के दर्शन के बाद पुनः पुनः उसी के दर्शन की इच्छा होगी क्योंकि वह अलौकिक है। इसलिये यह म्युझियम अलौकिक तथा एक अद्भुत स्मारक बनेगा।

महाराज सरमालक को शिक्षापत्री भेट में दिये तो आज भी वहाँ के म्युझियम में रखी हुई है। भूतकाल में वहाँ १०-१२ अपने मंदिर थे तो सभी शिक्षापत्री का दर्शन करने सत्संगी उस म्युझियम में जाते थे। अब मंदिर की संख्या बढ जाने से म्युझियम से शिक्षापत्री देना बन्द कर दिये अन्यथा उन दिनो कुछ पाउन्ड भरकर लेजाने देते थे। वे लोग विचार किये कि बार-बार देने से शिक्षापत्री का नुकशान हो जायेगा। जिसे दर्शन करना हो वह यहाँ आकर दर्शन करे। उन लोगों को देखें तो वे लोग नित्य नहाते भी नहीं है फिर भी शिक्षापत्री के प्रति कितना आदर था। वहाँ तो एक प्रसादी की वस्तु हैं यहां तो अनेकों प्रसादी की वस्तुयें होंगी। हम भी वहाँ एकबार शिक्षापत्री का दर्शन करने संतो के साथ गये थे। उस समय सत्ताधारी क्षारुक ने कहा कि दूर से दर्शन की जियेगा। स्पर्श नहीं करना है। उस समय संतो ने कहा कि जो शिक्षापत्री आपके पास है वह इन्हीं के दादा की है, उन्हीं के छट्ठी पीढी के हैं। यह सुनकर अंग्रेज के मन में हुआ कि इस प्रसादी की वस्तु का मुझे अनेकों वार स्पर्श करने का अवसर मिला है। यहाँ स्वामी निर्गुणदासजी कथा कर रहे हैं जो प्रभु के लीला चरित्रों को सुना रहे है इन्हें तथा पी.पी. स्वामी को म्युझियम में प्रसादी की वस्तुओं का किस तरह उपयोग करना है इस कार्य के लिये इन दो संतो को सौंपा गया है।

महाराज के विचरण काल के भारत का नक्शा देखें तो ख्याल आयेगा कि दक्षिण भारत होते हुये गुजरात, कच्छ, काठियावाड तक महाराज की गति कैसी है। वन विचरण के समय महाराज को कितने राजा अपनी कन्या देने को तैयार थे और अपना राज्य देने को तैयार थे परंतु महाराज कहीं रुके नहीं। वे महाराज कच्छ तथा काठियावाड़ में जाकर अपनी सीमा पूर्ण कर दिये। भक्त किस तरह सुखी हो सकते हैं इस रीति को महाराज ने सिखाया है। आपके घर कोई खराब व्यक्ति आजाय तो भी उसके साथ दो शब्द बोलना तो पड़ता ही है। कुछ स्वागत तो करना पड़ता ही है। फिर मन में होता है कि कितना जल्दी यहाँ से चला जाय। इसी तरह हमें भी जगत का सुख भोगना चाहिये। बहुत उस में ओतप्रोत नहीं रहना चाहिये। सच्चा सुख तो सत्संग में तथा श्रीजी महाराज के आश्रय में हैं।

सत्संग का सुख भोगने आजाय तो कुछ बाकी नहीं रहता। महाराज ने सत्संग मात्र से कहा है कि हमारा आश्रय दृढ रखना। अभी एक हरिभक्त बात कर रहे थे कि अमुक हरिभक्त बहुत अच्छे हैं। चोटी रखते हैं। टी.वी. नहीं देखते। परंतु वे मूल सम्प्रदाय से अलग हो गये हैं। सामने वाले मे चले गये हैं। हमने कहा कि तब वाकी कुछ रहा नहीं क्योंकि गुण बहुत हो लेकिन किस काम के। गुणातीतानंद स्वामी कहते कि सोते हुये भी कोई भोजन करे तो भी महाराज का आश्रय दृढ हो तो उसे लेने स्वयं आते हैं। इसलिये श्री नरनारायणदेव का या श्री लक्ष्मीनारायण देव का ही आश्रय होना चाहिये।

रात्रि की सभा में कोई जल्दी नहीं होती क्योंकि कहीं जाना रहता नहीं हैं। शांति का वातावरण होता है। इसलिये कथा श्रवण का विशेष आनंद मिलता है। लेकिन रात्रि सभा में नींद भी जल्दी आने की संभावना है, किसी को खबर भी नहीं पड़ेगी। गढपुर की सभा में महाराज कहते कि कथा में किसी को नींद आती हो तो बगलवाले को चाहिये कि वह जगादे। इसके बाद भी नींद आवें तो दंडवत करके खड़े कथा सुने। इसके बाद भी नींद आवे तो घेला में जाकर स्नान करके आवे, इसके बाद नींद आवे तो घर जाकर सोजाना चाहिये। इस सभा में सभी संत हरिभक्त को खूब खूब धन्यवाद।

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की अमृतवाणी

संकलन : गोरधनभाई वी. सीतापरा (हीरावाडी-बापुनगर)

कांकरिया मंदिर के ब्रह्मभोज के अवसर पर प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री कहते हैं कि ''इस वर्ष म्युझियम के अलांवा कुछ करना नहीं है । म्युझियम को ध्यान में रखकर प.पू. आचार्य महाराजश्रीने सभी को आशीर्वाद दिया था । उसे यहाँ लिखते नहीं है। परंतु एप्रोच बापूनगर श्री स्वामिनारायण मंदिर के पंचम पाटोत्सव के प्रसंग पर सभा में महाराजश्रीने जो आशीर्वाद दिया था उसका यहाँ उल्लेख करते हैं।

अनंत कोटि ब्रह्मांड के अधिपति सर्वोपरि श्रीहरि यहाँ के मंदिर में जब से विराजमान हुये उसके पांच वर्ष पूर्ण हो गये । हमें जो भगवान मिले हैं सर्वार्थ साधक हैं। संत एवं शास्त्र मिले हैं । यह सब सत्संग सिवाय कहाँ मिलेगा । दुनिया में भगवान को पाने के लिये खूब परिश्रम करते हैं । लेकिन उन्हें भगवान मिलते है या नहीं यह एक प्रश्न है । हमें तो हमारे भगवान स्वयं दरवाजे दरवाजे घूमें हैं । सत्संग के बाहर देखें तो वहाँ भगवान को दंडवत भी करने नहीं आता । जब कि अपने सत्संग में तो छोटा सा बालक भी कितना सुन्दर दंडवत करता है। सत्संग में हमें यह सबकुछ बड़ी सरलता से मिल गया है। इसलिये इसका महत्व नहीं समझपाते । हकीकत में मनुष्य जन्म पाकर व्यर्थ जाने नहीं देना, सदा सावधान होकर सत्संग करना श्रेयस्कर होगा ।'' अभी हम आ रहे थे तो देखा कि एक माताजी अपने पौत्र को गेट पर शोभा के लिये माणकी पर सवार महाराज के पैर का स्पर्श करवा रही थी । इसी तरह माणकी के चरण का भी स्पर्श करवा रही थी । जब कि उस स्टेच्यु में न महाराज है, नहि माणकी हैं . फिर भी माताजी की महाराज में कितनी भावना है कि उस स्वरुप में भी महाराज दिखाई दे रहे हैं । पौत्र संस्कार की कितनी चाहना है । दूसरा विचार यह आया कि भगवान की कथा जब होती है तब सभा मंडप की पूजा होती है। उस समय भक्त एकाग्रमन से भगवान की भक्ति करे तो महत्व बढ जायेगा । इसीलिये तो भगवान तथा भक्त एक दूसरे की महिमा को समझते हैं । वचनामृतमें भी महाराज कहते हैं कि भगवान के भक्त का जो अवगुण देखता हैं उसे आधा विमुख समझना चाहिये । प्रत्येक की प्रकृति अलग-अलग होती है । किसी में क्रोधहोता है, किसी में ईर्ष्या का भाव होता है, फिर भी भक्त को चाहिये दोष न देखकर गुण ही देखे ।

पूर्व विस्तार खूब फला फुला है । यहाँ संत तथा हरिभक्तों का समन्वय अच्छा है । शा. निर्गुणदासजी निरन्तर भगवान की कथा सुनाकर सत्संग का पोषण करते रहते हैं । इससे सत्संग उत्तरोत्तर वृद्धि को प्राप्त हुआ है । अभी जव हम आये उस समय श्री नरनारायणदेव की सुन्दर कथा चल रही थी । लेकिन समय के अभाव के कारण कथा को संक्षिप्त कर दिया गया । प्रत्येक भक्त प्रतिदिन मंदिर जाये, कथा सुने, इसीमें सच्चा सुख है ।आप लोग सदा सुखी रहें ऐसी श्री नरनारायणदेव के चरणों में प्रार्थना ।

प.पू. बड़े महाराजश्री की श्री स्वामिनारायंण म्युझियम के प्रचारार्थ यु.एस.ए. धर्मयात्रा

– प्रहलादभाई वी. पटेल (न्युजर्सी करजीसणवाला)

श्री स्वामिनारायण म्युझियम प.पू. बड़े महाराजश्री का एक दिव्य संकल्प है । जो निश्चित अपने इष्ट देव की प्रेरणा भासित होती है । श्री स्वामिनारायण म्युझियम का दिव्य संकल्प का सम्पूर्ण विश्व में प्रचार हो इसके लिये प.पू. बड़े महाराजश्री अविरत विचरण करते रहते हैं। ४ मार्च २०१० गुरुवार को पू. बड़े महाराजश्री शा.स्वा. निर्गुणदासजी तथा कनुभगत सर्वप्रथम न्युजर्सी पधारे थे । दूसरे दिन माधव प्रसाददासजी, भी प्रहलादभाई, श्री ज्ञानेशभाई, श्री संजयभाई, श्रीहरिकृष्णभाई, श्री जयंतीभाई तथा श्री कनुभाई वोशिंग्टन डी.सी. की यात्रा में साथ थे।

वोशिंग्टन डी.सी.में. श्री कनुभाई तथा श्री दीक्षित शाह तथा अन्य हरिभक्त तीन चार दिन तक सभाओं का आयोजन किये थे । हरिभक्तों के घर पदार्पण करते हुये पू. महाराजश्री को म्युझियम के लिये अच्छा आर्थिक सहयोग मिला । एक लाख से अधिक डालर आया । ता. ९ मार्च को पू. महाराजश्री चेरीहिल, न्युजर्सी, के मंदिर में पधारे थे । वहाँ की सभा में भी हरिभक्तों ने करीब ६० हजार डोलर सेवार्थ प्रदान किया । प्रफुल खरसाणी द्वारा तैयार की गयी सीडी तथा म्युझीयम के इंजिनीयर करसनभाई खूब सुंदर निर्देशन किये थे ।

ता. १० मार्च रीचमंडसीटी में वडु के अंबालाल के यहाँ पदार्पण किये बाद में हिंमतभाई के यहाँ निवास किये थे । कई घरों में पदार्पण करके रात्रि निवास पंकजभाई पटेल के यहाँ किये थे । जिस तरह श्रीजी महाराज बोटाद में वरसते पानी में विचरण कर रहे थे ठीक उसी तरह पू. बड़े महाराज श्री म्युझियम के लिये विचरण कर रहे थे ।

ता. १३ शनिवार को सांते सीटी में श्री निरंजनभाई जोषी ने मंदिर के हाल में सुंदर सभा का आयोजन किया था । सभा विसर्जित करके गरीब १० घंटे तक ड्राइविंग के बाद न्युजर्सी पुनः वापस आये थे । ता. १४ रविवार को विहोकन मंदिर में पू. बड़े महाराजश्री का जन्मोत्सव धूमधाम से मनाया गया था । सभा में करीब १२० यजमानों ने म्युझियम के लिये दान भेंट दिये थे ।

ता. १६ से २१ तक ह्युस्टन मंदिर के दशवें पाटोत्सव को मनाये । वहाँ पदार्पण करके करीब साढे तीन लाख डोलर्स का अर्थात् डेढ करोड का आर्थिक लाभ म्युझियम के लिये हुआ था । हरिभक्त पू. महाराजश्री के दर्शन का लाभ लेकर सुखी हुये थे ।

श्री नरनारायणदेव के २४ कलाक दर्शन के लीये देखिये वेबसाईट

www.swaminarayan.in

भारतीय समय अनुसार आरती दर्शन : मंगला आरती ५-३० • शृंगार आरती ८-०५

• राजभोग आरती १०-१० • संध्या आरती १९-३० • शयन आरती २०-३०

आध्यात्मिक मार्ग में आचार्य श्री अनिवार्य है

- प्रो. महादेव धोरियाणी (राजकोट)

आध्यात्मिक मार्ग में गुरु के रुप में पू. आचार्य महाराजश्री अनिवार्य है। कारण यहकि गुरु रुपी सूर्य ही सत्शास्त्रों के अर्थ प्रकाशित करते हैं। श्रीहरि के नाम का रसास्वाद या श्रीहरि की भक्ति आचार्यश्री महाराज के विना सम्भव हीं नहीं है।

वचनामृत ग.म. ६० में कहा गया है कि ''सर्व साधन करतां वासना टालवी ए साधन मोटुं छे। वासना रहित वर्तवुं एकांतिकनो धर्म छे। वासना टाले तेज एकान्तिक भक्ति छे। निर्वासनिक कहेता एकांतिक थवुं ते एवा निर्वासनिक संत थकीज थवाय छे।''

वासना से मुक्ति पाने के लिये पू. आचार्यश्री जैसे ब्रह्मस्वरुप गुरुवर्य का सानिध्य प्राप्त करना श्रेयस्कर है। कारण कि ''गुरु विना ज्ञान नहिं, गुरु विना ध्यान नहीं।''

पू. आचार्यश्री जैसे गुरु तो एकांतिक धर्म के धारक हैं। इसलिये उनके विना एकांतिक धर्म को धारण नहीं किया जा सकता। उनके बिना एकांतिक धर्म प्राप्त करना दुष्कर है। श्री सहजानन्द स्वामी के समय से ''धर्मवंश प्रागट्य'' को यह सम्प्रदाय प्राधान्य दिया है। उसी समय से यह परम्परा चल रही है।

ब्रह्म विद्या के जानकर आचार्यश्रीने इस वसुंधरा को तथा स्वामिनारायण सम्प्रदाय को देश विदेश में विचरण करके सतत आध्यात्म का सिंचन किया है। भक्तों को आध्यात्मिकता के शिखर तक लेगये हैं। आध्यात्मिकता यह भारत की धरोहर है। भौतिक ज्ञान की सिध्धि में भी गुरु की (शिक्षक) आवश्यकता होती है।

संक्षेप में यह कहा जासकता है कि पू. आचार्यश्री अवतार के अवतारी श्रीहरिकी अपार करुणा - कृपा का अविरत स्त्रोत भक्तों में बहा रहे हैं। समाज के लिये यह सबसे बड़ी उपलब्धिहै। इसलिये इनकी आज्ञा का पालन करना हमारी नैतिक फर्ज है।

स्वामिनारायण सम्प्रदाय के आचार्यश्री की परंपरा धर्म वंश कुलोत्पन्न बताई गई है। इसका उत्तम उदाहरण है - प.पू. बड़े महाराजश्री, प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री प.पू. लालजी महाराजश्री।

पू. आचार्य महाराजश्री तो उपमारहित हैं। अलौकिक है, दिव्य है। हमारे भवसागर पार करने का दृढ संकल्प लिये है। लौकिक विद्या के अनेकों गुरु हो सकते हैं लेकिन पू. आचार्य महाराजश्री आत्म बोधदेश-विदेश में सभी जगहों पर जाकर अपने भक्तों को देते हैं। इससे भक्तों में आत्मनिष्ठा दृढ होती है। अनुपम परब्रह्म परमेश्वर की संकल्प मूर्ति ऐसे पू. आचार्यश्री साक्षात् श्रीहरि के स्वरुप है, मात्र गुरु के स्वरुप ही नहीं।

पू. आचार्य महाराजश्री आध्यात्मिकता का साक्षात्कार किये है। इसलिये इनके सिवाय कौन गुरु के स्थान पर हो सकता है। जगत के अन्य गुरु भौतिकवाद में स्वयं फसे हैं तो आध्यात्मिक ज्ञान कहाँ से दे सकेंगे।

जब कि हमारे पू. महाराजश्री सत्संग रुपी नौका को भौतिकवाद से सुखी करते हुए आध्यात्मिकता के माध्यम से संसार सागर से पार कर देंगे। परम शांति पद की जिन्हे चाहना हो वे इन्ही की शरणागति स्वीकार करें।

सुख के लिये तथा भौतिकता के लिये रात दिन भटकने वाला मानव थक जाता है और आध्यात्मिक ज्ञान की तरफ भागता है। हमारे इस स्वामिनारायण सम्प्रदाय में तो पहले से ही भौतिकता के साथ आध्यात्मिक तत्व की धारा निरन्तर वहती आ रही है। किसी को भटकने की कोई जरुरत नहीं। मात्र गुरु की शरणागति एकवार हो जाय तो उसका भवसागर पार हो गया। भगवान स्वामिनारायणने जो सिद्धान्त बताये हैं उस पर चलते रहने की आज्ञा सदा पू. महाराजश्री देते रहते हैं। आज वर्तमान में उन्हीं महाप्रभु के अपर स्वरुप प.पू. बड़े महाराजश्री, प.पू. आचार्य महाराजश्री, प.पू. लालजी महाराजश्री विद्यमान है। जिनसे त्रिवेणी गंगासदा बह रही है।

प.पू. लालजी महाराज १०८ श्री व्रजेन्द्रप्रसादजी की प्रथम विदेश प्रवास तथा प.पू. गादीवालाश्री एवं श्रीराजा एवं श्री राजा का केनेडा प्रवास

श्री नरनारायणदेव महिला मंडल (केनेडावती)

अक्षरधाम में से पूर्ण पुरुषोत्तम भगवान श्री स्वामिनरायणने भारत वर्ष में संप्रदाय की स्थापना करके । युगों तक मोक्षार्थियों के लिये मोक्ष का मार्ग खोल दिया । सम्प्रदाय की व्यापकता बढ़े इस हेतु श्री नरनारायणदेव गादी के विद्यमान आचार्यश्री, प.पू. बड़े महाराजश्री, प.पू. गादीवालाश्री, प.पू. बड़ी गादीवालाजी देश विदेशमें भ्रमण करती रहती हैं।

मोर के अन्डे पर चित्र करना नहीं पड़ता ऐसे ही इस नरनारायण गादी के भावि आचार्यश्री १२ वर्ष की अवस्था में प.पू. दादाजी तथा प.पू. पिताजी के मार्गदर्शन में उन्हीं का अनुगमन करने के लिये देश विदेश की धर्म यात्रा प्रारम्भ कर दिये ।

प्रत्येक केनेडावासी को गर्व होना चाहिये कि पू. लालजी महाराज केनेडा को प्रथम प्रसंदगी किये ।

ता. १२ मार्च से छ दिन के लिये धर्मप्रवास में प.पू. गादीवालाजी केनेडा लालजी महाराजश्री तथा श्री राजा सां.यो. बहनों के साथ केनेडा पधारी थी । प.पू. बड़े महाराजश्री तथा प.पू. आचार्य महाराजश्री के विना की यह यात्रा थी ।

ता. १२ मार्च दोपहर चार बजे आने के समय मानो वहाँ की भूमि पावन होगयी हो । धर्मकुळ के स्वागतार्थ बड़ी संख्या में हरिभक्त वहाँ उपस्थित थे । आकाश में प्रेम की वर्षा हो रही थी मानो मेघ भी प्रसन्न होकर स्वागत कर रहे हैं।

यह स्वागत देखकर गादीवालाजी बहुत प्रसन्न हुई थी । प.पू. गादीवालाजी, प.पू. लालजी महाराज, प.पू. श्री राजाश्री के प्रथम प्रवास के समय वहाँ के सत्संगी खूब उत्साह में आकर उत्तम स्वागत किये और छ दिन का अलग-अलग प्रोग्राम की व्यवस्था किये थे ।

ता. १२ मार्च को पधारे, उस दिन मंदिर की सभा में प.पू. गादीवालाजी, श्री राजा तथा सां.यो. इत्यादि बहनो का स्वागत किया गया था । बड़ी संख्या में वहाँ के बहनों ने पू. गादीवालाजी से गुरु मंत्र की दीक्षा लेकर कंठी धारण की थी ।

शनिवार की साम को सांस्कृतिक प्रोग्राम लोकर स्कूल के होल में रखा गया था । जिसका उद्घाटन प.पू. लालजी महाराजश्री ने दीप प्रगट करके किया था । रविवार को प्रातः प.पू. लालजी महाराजश्री के हाथों ठाकुरजी का अभिषेक किया गया था । बहुत सारे हरिभक्त दर्शन का लाभ लिये थे । इस कार्यक्रम में प.पू. गादीवालाजी, श्रीराजा उपस्थित थीं । बाद में धर्मकुल का स्वागत पूजन किया गया था । अंत में प.पू. लालजी महाराजश्रीने आशीर्वाद दिया था ।

रविवार को सायंकाल मंदिर में बहनो की सभा का आयोजन किया गया था । चंपाबाने कीर्तन भक्ति द्वारा सभा की शुरुआत की । कोकिला बहनने भगवान के स्वरुप का सुन्दर निरुपण किया था । अन्त में जिसके लिये सभी आतुर थे ऐसी पू. गादीवालाने अपने दिव्य आशीर्वचन में बताया कि यह सत्संग एक परिवार है । भगवान ने यह शरीर दिया, यह शरीर प्राप्त कराके सत्संग दिया, सत्संग प्राप्त करके यदि भगवान की आज्ञा में न रहें तो इससे बड़ा दुःख और क्या हो सकता हैं । महाराज ने शिक्षापत्री दिया और आज्ञा की कि इसी की आज्ञा में सभी को रहना है । जिन्हे सुखी होना हो वे शिक्षापत्री की आज्ञा का पालन करें ।

इसी तरह वचनामृत के बहुत सारे प्रश्नों को बड़ी सरलता से समझाई । जिसे सुनकर सभा स्तब्धहो गयी। सभी को आनंद आया । बाद में सन्ध्या आरती के समय श्री नरनारायणदेव के हाथ से एक पुष्प गिरा जिसे

गादीवालाजीने आशीर्वाद के रुप में स्वीकार कर लिया ।

सोमवार तथा मंगलवार को प्रातः काल हरिभक्तों के घर पदार्पण करवाया गया । सायंकाल टोरोन्टो डाउन टाउन तथा सी.एन.टावर गयी । सी.एन.टावर की ऊंचाई पर से टोरोन्टो शहर का निरीक्षण कीं । मंगलवार के सायंकाल नायेग्रा फोल्स देखने गयी । बाद में पिकनिक का आनंद लेकर सभी घर वापस आये ।

बुधवार-प्रातः मंदिर दर्शन करने पधारी । सायंकाल ६ बजे एरपोर्ट के लिये प्रस्थान कीं । सभी को विदाई के समय अन्तर में आत्मीय दुःख हो रहा था ।

प.पू. लालजी महाराज युवानों को, प.पू. गीदावालाजी बहनों को तथा श्रीराजा छोटी बहनों को प्रेम की डोरी में बांधकर बिदाई ली थी ।

अंत में विदाई के समय पू. गादीवालाजीने कहा हम इस सत्संग को अपने कुटुम्ब की तरह माने हैं । हम पुनः वापस आयेंगे ।

मंदिर के प्रत्येक हरिभक्त दिव्यता का अनुभव किये । इस प्रसंग के समय निवासकी व्यवस्था श्री नैमेषभाई त्रिवेदी, सांस्कृतिक प्रोग्राम में भाईयों को मार्गदर्शन देने वाले सत्यस्वरुपदासजी, बहनो को मार्गदर्शन देने वाली नीताबहन मिस्त्री थी । स्पेशल अमेरिका से माधव स्वामी आये हुये थे, उन्होंने बताया कि पूरे सत्संग पर धर्मकुल का तथा भगवान स्वामिनारायण का अपार स्नेह सदा रहा है आगे इसी तरह रहे ऐसी श्री नरनारायणदेव के चरणों में प्रार्थना ।

प.पू. लालजी महाराजश्री एवं धर्मकुल का टोरोन्टो केनेडा का धर्मप्रवास

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री, प.पू. बड़े महाराजश्री की आज्ञा से ता. १२ मार्च से १७ मार्च तक प.पू.अ.सौ. गादीवालाजी, भाविआचार्यश्री लालजी महाराजश्री, पूज्या श्री राजा, तथा सां.यो. बहन प्रथमवार टोरोन्टो-केनेडा में सत्संगियो को धर्मलाभ देने पधारी थी ।

स.गु.शा.स्वा. पी.पी. स्वामी (जेतलपुर) की प्रेरणा से तथा स्वा. सत्यस्वरुपदासजी के मार्गदर्शन में सांस्कृतिक कार्यक्रम ३ से ७ बजे तक किया गया था । इस कार्यक्रम में ११ महीने के बालक से लेकर ५० वर्ष तक के सत्संगी भाग लिये थे । ड्रान्स, रास, भांगडा, नाटक, गरबा, हास्य जैसे अनेकों प्रोग्राम के साथ सत्संग कीर्तन तथा कथा प्रवचन किये गये थे । प.पू. लालजी महाराजश्री प.पू. गादीवालाजी तथा श्री राजा इन सभी कार्यक्रमो में पधारकर सभी को उत्साहित किये थे ।

ता. १४ मार्च रविवार को प्रातः सत्संग सभा में प.पू. लालजी महाराजश्री के शुभ हाथों से हरिकृष्ण महाराज का अभिषेक किया गया था । पू. लालजी महाराजश्री तथा श्रीराजा के हाथों से सांस्कृतिक कार्यक्रम में भाग लेने वाले सभी बालकों को आई.एस.एस.ओ. केनेडा लिखी हुई ट्रोफी दी गई थी ।

बहनों को सत्संग का लाभ देने के लिये ता. १३ शनिवार को प्रातः ९-३० से ११-३० तक तथा रविवार सायंकाल ५ बजे से ७ बजे तक प.पू. गादीवालाजी के सानिध्य में सत्संग सभा का आयोजन किया गया था । बहनों ने गुरुपूजन करके गुरु मंत्र लिया था । गादीवालाने सभी को आशीर्वाद प्रदान किया था ।

वडताल गादी संस्थान आश्रित भक्तों के आमंत्रण को मान देकर पू. लालजी महाराजश्री वडताल धाम के मंदिर में पधारे थे ।

प.पू.गादीवालाजी प.पू. लालजी महाराजश्री जी.टी.ए. विस्तार में हरिभक्तों के घर पदार्पण करके उनके मनोरथ पूर्ण किये थे ।

प्रमुखश्री दशरथभाई चौधरी तथा उपप्रमुख श्री नटुभाई पटेल ने धर्म कुल के प्रवास का सफल तथा सुंदर आयोजन स्वयंसेवक भाई बहनो तथा सत्संगीजनों के साथ सहकार से किया था ।

श्रीजी महाराज द्वारा बताया गया दुःख निवृत्ति का मार्ग

- प्रो. सूर्यकान्त भट्ट (भुज)

समुद्र में एक ही गति से जहाज नहीं चलते कारण यह कि हवा के झोकों से आगे पीछे होते रहते हैं। इसी तरह मनुष्य के जीवन में भी सुख दुःख रुपी झंझावात आते रहते हैं। लोक में कहावत है "दसका" अर्थात् दश वर्ष सुख तो दश वर्ष दुःख यही क्रम है . सुख-दुःख में जो समभाव रखता है उसे स्थित प्रज्ञ कहा जाता है। गीता में भगवान श्री कृष्ण स्थित प्रज्ञ की व्याख्या बताये हैं - सुख की अपेक्षा दुःख में मनुष्य दिशा हीन हो जाता है। दुःख पार करना बड़ा कठिन होता है। जब दुःख आता है तो मनुष्य अवाक हो जाता है। दुःख के कारण मनुष्य नाना जंजाल में घिरजाता है। जब दुख का पहाण मनुष्य पर टूटता है तभी मनुष्य भगवान क़ी गुहार लगता है। शांत की खोज में निकलता है। प्रभु के आश्रय में जाता है।

इस संसार सागर रुपी दुःख को दूर करने के लिये श्री सहजानंद स्वामीने वचनामृत में दुःख निवृत्ति का राजमार्ग बताया है। इस राजमार्ग पर चलने वालों को दुःख स्पर्श नहीं कर सकता । श्रीजी महाराजने गढडा प्रथम के ३४ वें वचनामृत कहा है कि "भगवान ना भक्त होय तेने जेटलु दुःख थाय छे ते तुच्छ पदार्थ ने अर्थे भगवानन्नी आज्ञा लोपे करीने थाय छे अने जेटलु सुख थाय छे ते भगवानन्नी आज्ञा पालवी करीने थाय छे".

सच्चे संत के सामर्थ्य को बताते हुये गढडा प्रथम के १४ वें वचनामृत में कहते हैं कि "गृहस्थना धर्म तो घणा कठण छे" अने अनंतप्रकारना सुख दुःख आवी पडे त्यारे संतनी सेवा मां थी अने धर्ममां मनने आडुं अवडुं डोलवा दे नहिं अने एम समझे जे संत नो समागम मल्यो छे ते तो मने परम चिंतामणी अने कल्पवृक्ष मल्या छे, अने धन दौलत दीकरा दीकरी ए तो सर्वे स्वप्न तुल्य छे। अने साचो लाभ तो संतनो समागम मळ्यो एज छे। एम समझे अने कोईपण भारे दुःख आवी पडे पण तेथी पाछो पडेनहि. एवो गृहस्थ श्रेष्ठ छे।

गढडा प्रथम के ६१ वें वचनामृत में श्रीहरि कहते हैं कि "जेम जेम भगवान आपणने कसणीमां राखे तेम तेम वधु राजी थवुं जोईए, जेमजेम भगवान मने वधु दुःख देशे तेम तेम वधु मारे वश थशे। अने पल मात्र माराथी छेड़े नहीं रहे। एवुं समझीने जेम जेम भगवान अति कसणी देता जाय तेम तेम अति रात्री थवुं पण कोई रीते दुःख देखीने अथवा देहना सुख सारुं पाछो पग भरवो नहिं।"

सत्संगी को किसी भी प्रकार की भयंकर पीडा़ आने वाली हो चाहे वह विच्छु के डंक जैसी हो या भाग्य में भीख मांगने को लिखा हो तो इन दोनो पीडाओ में से वे मुक्त रहे वह पीड़ा हमें मिले इस प्रकारका वचन अपने गुरु रामानंद स्वामी से श्रीहरि ने मांग लिया था। इसी लिये गढडा प्रथम के ७० वें वचनामृतमें श्रीजी हमाराज ने कहा है कि "अतिशय दुःख थवानुं होय तो एमांथी जीवने एम समझातु नथी के भगवानन्नी कृपाथी ते दुःख अवश्य दूर थई जाशे। जो शूली का दुःक लिखा होगा तो ते कांटा थी टणी जशे।"

विशेष में जेतलपुर के पांचवे वचनामृत में श्रीजी महाराज भक्तों को विश्वास दिलाते हुये कहा कि "अमारो दृढ विश्वास राखशो ने कहिये तेम करशो तो तमने महाकष्ट कोई आवी पड़शे तेथी अथवा सात दकाली (दुकाल) जेवुं दुःख पड़शे तो ते थकी रक्षा करशुं। अने कोई उगर्या नो आरो न होय तेवुं कष्ट आवी पडशे तोय पण रक्षा करशुं। जो अमारा सत्संगना धर्म बहुरीने करीने पाळशो तो, ने सत्संग राखशो तो।" वडताल के पांचवे वचनामृत में भगवान के आश्रय को लक्ष्य रखकर कहते हैं कि "भगवाननो दृढ आशरो जेने होय तेने महाप्रलय जेवुं दुःख आवी पड़े तो पण दे दुःख पाकी रक्षा नो करनारो भगवान विना बीजा न जो अने जे जे पोताने सुख जोइतुं होय ते पण भगवान थकी ज इच्छे ने प्रभु नी मरजी होय ते प्रमाणे ज वर्ते।"

इस तरह सहजानन्द स्वामीने अपने भक्तों के लिये दुःख निवृत्ति का अजोड़ - अचूक राजमार्ग बताकर नई प्रेरणा दिये तथा आत्मबल दिये।

प.पू. बडे महाराजश्री का ६६ वां प्रागट्यत्सव धूमधाम से मनाया गया

- शा. स्वा. नारायणवल्लभदासजी

चैत्र वद-३ ता. १-४-१० गुरुवार के दिन श्री नरनारायणदेव की छत्रछाया में तथा भावि आचार्य प.पू. लालजी महाराजश्री के सानिध्य में हम सभी के प्राणप्यारे प.पू. बड़े महाराजश्री का ६६ वाँ प्रागट्योत्सव विशाल सभा मंडप में संत-महंत तथा हरिभक्तों की विशाल उपस्थिति में धूमधाम के साथ मनाया गया । जिस मे सर्व प्रथम श्री जयेशभाई सोनी द्वारा भजन कीर्तन करके मंगलाचरण किया गया था।

इसके बाद सभा में सर्व प्रथम पवित्र विद्वान श्रीवाचस्पति मिश्रजी एवं कमलेशभाई शास्त्री इत्यादि भूदेवों द्वारा स्वस्ति वाचन करके प.पू. बड़े महाराजश्री का पूजन अर्चन किया गया था । स्वस्तिवाचन के बाद अहमदाबाद मंदिर के विद्वान महंत शा.स्वा. हरिकृष्णदासजी ने सर्वप्रथम पुष्पमाला पहनाकर स्वागत किया था । इसके पू. ध्यानी स्वामी, पू. पी.पी. स्वामी जेतलपुर, नारायणघाट मंदिर के महंत स्वामी, छपैया मंदिर के महंत स्वामी, गुरुप्रसाद स्वामी (कांकरिया) शा. श्रीजीप्रकाश स्वामी (नारायणपुरा) महंत शा.प्रेमस्वरुपदासजी (सिद्धपुर) शा.स्वा निर्गुणदासजी, अखिलेश्वरदासजी, महंत कृष्णवल्लभदासजी स्वा. रघुवीरदासजी, घनश्याम स्वामी (माणसा) आनंदप्रियदासजी, विद्यार्थी संत नारायणमुनिदास तथा स्कीम कमेटी के सदस्य श्री दशरथभाई पटेल, श्री रमणभाई पटेल, इत्यादि संत-हरिभक्त पू. बड़े महाराजश्री को हृदय के भावों से पुष्पहार पहनाकर आरती उतारे थे । इसके साथ ही सभी ने प्रेरक प्रवचन भी किये थे।

इस शुभ प्रसंग पर को. नन्दलालभाई तथा सोनी नीतिनभाई तथा श्री भास्करभाई ब्रह्मभट्ट इत्यादि हरि भक्तों ने पू. महाराजश्री को पुष्पहार पहनाकर आशीर्वाद प्राप्त किया था । इसके साथ सत्संग मंडल के छोटे-छोटे बालक प.पू. लालजी महाराज को पुष्पमाला अर्पण किये थे । इस शुभ प्रसंग पर पू. लालजी महाराजश्री ने अपनी अमृतवाणी द्वारा पू. बड़े महाराजश्री के स्वास्थ्य तथा दीर्घायुष्य की कामना से श्री नरनारायणदेव के चरणों में प्रार्थना किये थे।

अंत में प.पू. बड़े महाराजश्री ने विशाल सभा में संत एवं हरिभक्तों से अपने जन्मदिन प्रसंग पर श्री स्वामिनारायण म्युझियम महोत्सव सफल होने के लिये शुभाशीर्वाद की प्रेरणा व्यक्त की थी। इसके साथ सभीने शुभ भाव व्यक्त किया था । सभा संचालन शा. नारायणवल्लभदासजीने किया था। अंत में श्री स्वामिनारायण महामंत्र की धून के साथ सभा विसर्जित हुई थी।

प.पू.अ.सौ. गादीवालाजी के आशीर्वचन में से "एकादशी अर्थात क्या ?"

संकलन : कोटक वर्षा नटवरलाल (घोडासर)

एकादशी अर्थात पांच ज्ञानेन्द्रिय, पांच कर्मेन्द्रिय तथा इग्यारहवां मन। इन इग्यारह प्रकार के रसों का त्याग करना ही एकादशी है। उपवास क्या है। उप अर्थ् समीप में वास अर्थात् बैठना, इस तरह इसका यह अर्थ हुआ कि परमात्मा के समीप में बैठना। उपवास का दो और लाभ है। एक मानसिक तथा दूसरा शारीरिक। मानसिक लाभ क्या है ? भोजन बनाने में किनती प्रक्रिया करनी पड़ती है, वह क्रिया न करनी पड़े तो मानसिक शांति का अनुभव होता है। उस समय आध्यात्मिक शांति का अनुभव होता है। उस समय आध्यात्मिक भजन-भक्ति, महाराज की मूर्ति का चिंतन करने का समय मिल जाता है। दूसरा शारीरिक लाभ - चार टाईम भोजन न करना हो तो शरीर को आराम मिल जाता है। मशीन होती है तो उसे भी सतत चालू नहीं रखा जाता, उसे भी आराम की जरुरत होती है उसी तरह भोजन न करने से संयम होजाता है और शारीरिक स्फूर्ति बढ जाती है। उपवास करने से पाचन शक्ति भी बढती है। मात्र उपवास करने से ही महाराज प्रसन्न होते हैं ऐसा नहीं है। इसके साथ श्रध्धा, निष्ठा, इन्द्रियों को जीतने के लिये तथा अंतः शत्रुओं को जीतने के लिये मानसिक चिन्तन भी आवश्यक है। एक कहावत है कि जब किसी शत्रु को जीत न सके तो उसके साथ मित्रता करलेना चाहिये। अपने अन्तः शत्रु कौन है - काम का अन्तः शत्रु ब्रह्मचर्य, क्रोधका शत्रुं शांति, अहंकारका शत्रु सरलता, लोभ का शत्रु दान, मोह का शत्रु त्याग कहे गये हैं। इस तरह इन्द्रियों पर विजय प्राप्त करना है। एक आदमी गधे की रस्सी पकड़कर जा रहा था। वह आगे उसके पीछे गदहा चल रहाहै। एक व्यक्ति दूसरे से कहा कि उस गदहे की रस्सी को जाकर काटदे। ऐसा ही किया, रस्सी कटते ही गदहा आगे दोड़ने लगा और वह आदमी उसके पीछे दौड़ने लगा। इसी तरह हम भी इन्द्रियों के अन्तः करण रुपी रस्सी को छोड़ देंगे तो मन उसके पीछे दौड़ेगा ही। परमात्मा के साथ यदि अटूट सम्बन्धरखेंगे तो टूंटने का अवसर नहीं आयेगा।

भक्तिसुधा

सच्चा बुद्दि शाली कौन ?

- सां.यो. कोकिला बा (सुरेन्द्रनगर)

श्रीजी महाराज ने वचनामृत में दो राजमार्ग बताया है। अधोगति मार्ग ऊर्ध्वगति मार्ग। इन दोनोमें से चयन अपने को करना है। करीब १०० वचनामृत में अवगुण कैसे दूर हो तथा गुण ग्राहक किस तरह बने इस पर चर्चा किये हैं। श्रीजी महाराज वचनामृत में भगवान के भक्त का अभाव अवगुण, द्रोह न करने की आज्ञा दी है। महाराज ने वचनामृत में कईबार बुद्धिमान तथा अल्पबुद्धिवाले की व्याख्या की है। बुद्धिमान वह है जो अपने अवगुण को देखे। अल्पबुद्धि वाला वह है जो दूसरे के दुर्गुण को देखे।

हरिचरित्रामृत सागर में महाराजने कहा है कि जो भक्त मेरी सेवा करता हो तथा अन्य के अवगुण को लेता हो तो वह सेवा वज्र के समान लगती है। इसलिये भगवान की महिमा को जानकर तथा भक्त के भाव में कोई दोष न हो तो वह भक्त ब्रह्मरुप हो जाता है।

अवगुण को जहर बताया गया है। जिस तरह गटर का पानी तथा विष्टा का सेवन सुख नहीं दे सकता ठीक यही स्थिति भक्त में अवगुण देखने वाले के साथ सहवास का फल है। किसी व्यक्ति में स्वयं का अवगुण नहीं

दिखाई देता । अवगुण स्वयं में भी नहीं होना चाहिये । जब स्वयं में अवगुण नहीं रहेगा तभी दूसरे में अवगुण दिखाई नहीं देगा । अवगुण को अग्नि का रुप कहा गया है । सत्संग के लिए अवगुण अग्नि है । अपने सारे गुण उस अवगुण रुपी अग्नि में भस्म हो जायेगे इसलिये गुण के चाहक बनने में हित है । भगवान में, संत में, भक्त में अवगुण नहीं देखना चाहिये ।

अक्षरधाम वन वे हैं वहाँ अभाव, अवगुण वालों के लिये रास्ता बन्द है । महाराज केवल एक ही व्यक्ति में अवगुण देखने को कहा है वह है स्वयं का अवगुण देखना। दूसरे के अवगुण देखने वाला ईर्ष्यालु बताया गया है । हरिकृपा के विना अपने में दोष देखना सम्भव नहीं है । अपने में जब तक दोष देखना संभव नहीं होगा तब तक अक्षरधाम सम्भव नहीं । जब से सत्संग में आये उस समय से भक्तों में तथा संतो में अवगुण जो न देखा हो उसे भगवान नित्य दर्शन देने आते हैं।

भागवत में व्यासजीने लिखा है कि हे नारद ! मेरे में प्रीति हो, स्नेह हो, मेरा जो अखंड भजन करता हो, लेकिन संतो को दुःख देता हो, अवगुण लेता हो तो भजन करते हुये भी नरक में जायेगा । उसकी अधोगति होती है । इसलिये गुणग्राही बनने की आवश्यकता है । तभी परम पद की प्राप्ति संभव है।

•

भक्त के घर की चिंता महाराज को

– सां.यो. अल्पाबहन गुरु शिल्पाबहन (गुजपुर)

एक वैद्यराज की प्रवृत्ति सुनने लायक है । भक्त होते हुये भी प्रवृतिवाले थे । ऐसे भक्त को प्रवृति बांध नहीं सकती । रात्रि का समय था । बैद्यजी की पत्नी का नाम अमृत बहन था । दोनो घर में सोये हुये थे । ओसारी में नौकरानी सोई थी । उसी समय आग लग गयी । वे तीनो में से कोई उठा नहीं । भक्त के घर में आग लगे तो भगवान को चिन्ता होती है । भगवान अक्षरधाम में हैं उन्हे यहाँ की खबर होती है । हम यहीं पर है हमारे सामने घटना हो तो भी ख्याल नहीं आता । सामने नुकशान होने पर भी आदमी कहता है कि थोड़ा बहुत तो होता है, लेकिन भगवान अपने भक्त का नुकसान न हो इसलिये दौड़ आये । भगवान को खबर थी कि सभी सो रहे है, ऐसे छोटे काम के लिये क्यों जगाना । नौकर को जगाते हैं । कईबार जगाने पर भी वह इस करवट से उस करवट होता रहा । जाग भी गया तो महाराज ने कहा तुम्हारे मालिक का मकान जल रहा है, उस नौकरने कहा मेरा क्या, जल रहा है तो मालिक का न, मालिक और नौकर मे अन्तर का ख्याल तो सभी को आजाता है । जैसे किसी गाड़ी में बैठे हों तो तुरंत ख्याल आ जायेगा कि यह गाड़ी नौकर चला रहा है या मालिक । घर में या दुकान में काम करने वाले से ख्याल आ जाता है कि यह नौकर है या मालिक । मंदिर में भक्त दर्शन करने आते हैं तो कचरा कोई नहीं उठाता, जबकि घर में तुरंत उठा लेते हैं । गढडा में एक बार ऐसा हुआ महाराज भक्तों तथा संतो के साथ निम्ब वृक्ष के नीचे दिव्य वाणी का लाभ दे रहे थे । उस समय दरबार के रास्ते में कोई कुत्ता विष्टा कर दिया था, जो भी जाय मुंह विगाड़कर आगे चला जाता और यह कहते जाता कि देखो कोई विगाड़ दिया है, लेकिन कोई सफा नही किया । उसी समय उका खाचर आये उन्होने कहा कि सेवा पहले कथा बाद में । तुरंत ही विष्टा साफ कर दिया और स्नान करके बाद में सभा में गये । कितने लोग तो कहने लगे कि उका थोड़ा जल्दी आते तो अच्छा रहता ।

भगवान स्वामिनारायणने कहा घर के मालिक है ये । जिन्हे घर से ममता हो, स्थान के प्रतिप्रेम हो, वही घर का मालिक होता है । इसके सिवाय अन्य ही कहे जायेंगे । सभी सत्संगी अपने हैं । इस तरह महाराज ने भक्त की प्रशंसा की ।

हमारी वाणी ही हमारा स्वरुप है.

- चंद्रिकाबहन कनुभाई भावसार (नवावाडज)

प्रभु की बोल ही अनमोल मोती है। शिक्षापत्री ही अक्षरदेह है। गृहस्थ तथा त्यागी को सरलता से जो सुख दें वे हैं सहजानंद स्वामी। इस नाम में विशिष्ट रहस्य छिपा हुआ है। शिक्षापत्री सिन्धु में बिन्दु जैसी है। गागर में सागर जैसे है।

आज से करीब एक सौ पचासी वर्ष पूर्व भगवान के मुख से बोली गयी तथा लिखी हुई शिक्षापत्री अमूल्य पत्रिका है। जगत के इतिहास में ऐसा कोई ग्रन्थ नहीं है। इसका कारण यह है कि इस ग्रन्थ को स्वयं भगवानने लिखा है।

वर्तमान में जब कि घोर कलिकाल का प्रभाव जन-जन पर प्रभावित हुआ है, तो भी शिक्षापत्री की आज्ञा में जीवन जीने वालो पर उसका प्रभाव नहिवत रहेगा। त्यागी अपने त्यागाश्रम के नियम में रहे, गृहस्थ अपने गृहस्थ का धर्म पालन करें स्त्री, पुरुष, ब्राह्मण, वैश्य, शूद्र सभी के अलग-अलग धर्म, नीति, नियम का निरुपण करके महाराज ने उसी बताये नियम-आज्ञा में चलने से कलियुग का प्रभाव नहीं होगा और सभी सुखी होंगे। अन्यथा युग का ऐसा प्रभाव होगा कि पिता के कन्धे पर पुत्र की अर्थी होगी। इसका सदा ध्यान रखकर शिक्षापत्री का सूक्ष्म चिन्तन करके महाराज की आज्ञा में अपना जीवन जो वितायेंगे वे जगत के सुख को तो भोंगेंगे बाद में महाराज उन्हें अपने धाममें लेजायेंगे। मनुष्य मात्र को मनवांछित फल देने वाली शिक्षापत्री का प्रतिदिन सभी सत्संगी को वाचन करना चाहिये। शिक्षापत्री मेरी स्वरुप है। इस शिक्षापत्री का करोड़ो सुवर्ण मुद्रा से भी अधिक मूल्य है।

पेज नं. ५ से आगे

निष्कामी व्रतधारी परम भक्त मूलजी खांट

खांट अपने व्रत पर दृढ रहे। इनका जीवन उदाहरण बन गया। इस गाँव के बगल में धमासणा गाँव है। श्रीहरि के प्रसादी का यह गाँव है। श्रीजी के समकालीन संत गुरुचरणरतानंद का यह जन्म स्थान है। इस धमासणा गाँव में एक प्रसंग ऐसा होगया कि दरबारों के कुटुम्ब में ननद भौजाई का झगड़ा था - वह इस लिये कि ननद वस्त्रालंकार पहनकर सारे गाँव में घूमती रहती भौजाई को यह देखा नहीं जाता था और वह समझाती थी कि तुम दूसरे के घर जाओगी तब यह सब नहीं मिला तो क्या करोगी ? यह सुनकर उसने विचार किया कि मूलजी खांट के साथ ही विवाह करुंगी अन्यथा यावत जीवन ब्रह्मचारिणी रहूंगी। वह दौड़ते हुये आदरज गाँव मूलजी खांट के यहाँ गई और चिल्लाकर कहने लगी कि मेरे साथ आप विवाह करो। सुनते ही मूलजी कहने लगे कि मैं भगवान की भजन करने के लिये जीवन भर ब्रह्मचर्य रहने की प्रतिज्ञा किया हूँ। आप मेरी बहन है फिर भी आप आई हैं तो बहन के रुप में साथ रहिये। पत्नी के रुप में नही। क्योंकि सभी स्त्रियां मेरी बहन हैं। यह मूलजी का आदर्शजीवन था।

जो महिला मूलजी के साथ विवाह करने गयी वह भी आजीवन ब्रह्मचर्य व्रत का पालन करके भगवान स्वामिनारायण का भजन की और अक्षरधाम की अधिकारी हुई। इस महिला का जहाँ पर दाहसंस्कार किया गया था वहाँ गाँव वाले पुष्प चढाते और मान्यता रखते। ऐसीवह ऐतिहासिक स्थल आदरज गाँव की घटना सारे सम्प्रदाय के लिये उदाहरणरुप है।

सत्संग समाचार

अहमदाबाद मंदिर में श्री नरनारायण जयंती फूलदोलोत्सव धूमधाम से संपन्न

भरतखंड के अधिष्ठाता सर्वावतारी श्री नरनारायणदेव के दिव्य सानिध्य में फाल्गुन कृष्ण पक्ष-२ ता. २-३-१० को श्री नरनारायण जयंती दोपहर में १२-३० बजे श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री तथा भावि आचार्य प.पू. लालजी महाराजश्री के वरद् हाथों से भव्याति भव्य ढंग से मनाया गया था । सर्व प्रथम श्री नरनारायणदेव की आरती उतारकर अहमदाबाद मंदिर के विशाल प्रांगण में अद्यतन इलेक्ट्रिक साधनो से सुसज्ज मंच पर किंसुक पुष्प से बने रंगो से पिच कारी के माध्यम से प.पू. आचार्य महाराजश्री तथा प.पू. लालजी महाराजश्री संत-हरिभक्तों को भिंगो दिये थे । प्रत्येक व्यक्ति का मन आज के आनन्द को लेने के लिये उत्साहित हो रहा था । सम्पूर्ण प्रांगण किंसुक के रंग से देदीप्यमान हो गया था । इस प्रसंग पर महंत शा.स्वा. हरिकृष्णदासजी तथा को. पा. दिगम्बर भगत के मार्गदर्शन से सेवा का कार्य किया गया था । दूरदर्शन तथा ई.टी.वी. की केमेरा टीमने इस प्रसंग का सुन्दर प्रसारण करके देश की धार्मिक जनता को दर्शन का लाभ दिया था । -शा. दिव्यप्रकाशदास

अहमदाबाद मंदिर में रामनवमी का उत्सव धूमधाम से मनाया गया

सर्वावतारी भगवान श्री स्वामिनारायण का चैत्र शुक्ल-९ को रात्रि में १०-१० बजे प्रागट्योत्सव धूमधाम से मनाया गया।

प्रातः ६-३० से ७-०० बजे तक अक्षर भुवन में विराजमान बाल स्वरुप घनश्याम महाराज का पाटोत्सव अभिषेक प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के वरद् हाथो से संपन्न किया गया था । दोपहर में १२-०० बजे लीला पुरुषोत्तम श्री रामचन्द्रजी भगवान का जन्मोत्सव मनाकर आरती उतारी गयी थी।गाँव तथा शहर के हजारों हरिभक्त इस दर्शन का लाभ लिये थे । महंत शा.स्वा. हरिकृष्णदासजी तथा को.पा. दिगंबर भगत के मार्गदर्शन में जे.के. स्वामी तथा संत मंडल सुंदर व्यवस्था का कार्यभार सम्हाला था ।

बाल स्वरुप घनश्याम महाराज का अन्नकूट दर्शन दोपहर में १-०० बजे तक सतत चालू था । प्रत्येक यात्रिकों के लिये फलाहार की व्यवस्था मंदिर द्वारा की गयी थी । दोपहर में गर्मी को ध्यान में रखकर सभी के लिये छाछ की व्यवस्था की गयी थी। सभा मंडप में शा. दिव्यप्रकाशदासजी गुरु महंत स्वामी तथा जयेश सोनी, श्री घवलभाई इत्यादि ने सुन्दर कीर्तन का गायन किया था । रात्रि में १०-१० बजे प.पू. बड़े महाराजश्री के वरद् हाथों से प्रागट्योत्सव की आरती की गयी थी । इस प्रसंग पर पटाका फोड़कर जन्मोत्सव को दिव्य ढंग से मनाया गया था । रात्रि में दर्शनार्थियों की खूब भीड़ थी । - तपन पटेल

जेतलपुरधाम में श्री रेवती बलदेवजी हरिकृष्ण महाराज का पाटोत्सव संपन्न

सम्प्रदाय के प्रसिद्ध तथा पावन भूमि जेतलपुरधाम में श्री स्वामिनारायण मंदिर में विराजमान सर्वोपरि श्री रेवती बलदेवजी हरिकृष्ण महाराज के तथा बाल स्वरुप घनश्याम महाराज के वार्षिक पाटोत्सव पारायण शा.स्वा. हरिओंप्रकाशदासजी के वक्तापद पर सम्पन्न हुई । फाल्गुन कृष्ण पक्ष-९ ता. २-३-१० सोमवार को प्रातः ७-०० बजे श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के वरद् हाथों महाभिषेक सम्पन्न हुआ था । इस प्रसंग पर हजारों हरिभक्त दर्शन करके धन्य हो गये थे । पाटोत्सव के प्रासंगिक सभा में सर्व प्रथम यजमान परिवार के श्री चंदुभाई शिवाभाई गणात्रा ने प.पू. बड़े महाराजश्री का तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री पूजन, अर्चन, आरती करके आशीर्वाद प्राप्त किया था । श्रीहरियाग का आयोजन श्री तुषारभाई लेहरु के आचार्य पद पर सम्पन्न हुआ था । पाटोत्सव के पूर्व यजमान द्वारा सभी देवों के लिये बनाई गई अलंकृत शाल के साथ अक्षरमहल से मंदिर तक जलयात्रा निकाली गयी थी । बाद में प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से पू. शा.स्वा. पी.पी. स्वामी, महंत शा.स्वा. आत्मप्रकाशदासजी की प्रेरणा से, श्री प्रभुदास पटेल कुबडथलवाले श्री योगेशभाई पंड्या द्वारा बताये गये वी.सी.डी. का विमोचन तथा साम्प्रदायिक परिचय वाले "सत्संग सागर" ग्रंथ का तथा प्रति रविवार को घर के सदस्यों के लिये "घर सभा" पुस्तक को पी.पी. स्वामी ने तैयार किया था इन सभी पुस्तकों का प.पू. महाराजश्रीने विमोचन करके शा.स्वा. पी.पी. स्वामी का सम्मान किया था । महेसाणा में कशळीबा के घर में श्री बैभवभाई शाह को हुये अनुभव का स्वयं की भाषा में वर्णन किये थे । महंत शा. स्वा. आत्मप्रकाशदासजी, कांकरिया के महंत, धोलका के महंत, जमीयतपुरा के महंत, अक्षर महोल वाडी के हरिओ स्वामी, छपैया के महंत स्वामी, इत्यादि संतो ने प्रेरक प्रवचन किया था । अन्त में प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्रीने हार्दिक आशिर्वाद दिया था । इस प्रसंग पर महंत के.पी. स्वामीने सुंदर आयोजन किया था । अंत में प.पू. आचार्य महाराजश्री अन्नकूट की आरती उतारकर सभी को दर्शन का लाभ दिये थे । महिलाओं को दर्शन

का लाभ देने के लिये प.पू.अ.सौ. गादीवालाजी, प.पू. बड़ी गादीवालाजी पधारी थी। - शा. भक्तिनन्दनदास

श्री स्वामिनारायण मंदिर कांकरिया ब्रह्मभोजन

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री प.पू. बड़े महाराजश्री के आशीर्वाद से तथा कांकरिया के महंत स्वामी की प्रेरणा से फाल्गुन शुक्ल-५ ता. १५-२-१० से १९-२-१० तक ब्रह्मभोज, पाटोत्सव तथा पारायण का सुन्दर आयोजन किया गया था। शा.स्वा. यज्ञप्रकाशदासजीके वक्तापद पर संगीतमय शैली में श्रीमद् भागवत पंचाह्नपारायण का आयोजन हुआ था। ता. १९-२-१० को प्रातः ६-३० बजे प.पू. आचार्य महाराजश्री के शुभ हाथो से ठाकुरजी का तथा कष्टभंजन देवजी का महाभिषेक किया गया था। प्रातः ९-०० बजे श्री राधाकृष्णदेव की अन्नकूट आरती पू. महाराजश्री ने की थी। उसके बाद कथा की पूर्णाहुति की आरती किये थे। यजमान परिवार प.पू. महाराजश्री की आरती उतारे थे। इस प्रसंग पर दर्शन का लाभ देने प.पू. बड़े महाराजश्री पधारे थे। अहमदाबाद, धोलका, जेतलपुर, मूली इत्यादि धामों से संत, महंत, ब्राह्मण पधारे थे। विधान सभा के अध्यक्ष श्री अशोकभाई भट्ट भी पधारे थे। अन्त में समस्त सभा को प.पू. आचार्य महाराजश्री, प.पू. बड़े महाराजश्रीने आशिर्वचन दिया था। सभी को श्री स्वामिनारायण म्युझियम के उत्सव को भव्यता से मनाने के लिये आज्ञा किये थे। पुजारी स्वा. देवकृष्णदासजीने ठाकुरजी की सेवा एवं नरोत्तम भगत के संतो के रसोई की सेवा तथा मणीनगर-कांकरिया के हरिभक्तों की सेवा सराहनीय थी।

- नरोत्तम भगत

श्री स्वामिनारायण मंदिर राणीप रजय जयंती महोत्सव

श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री, प.पू. बड़े महाराजश्री तथा समस्त धर्मकुल के आशीर्वाद से एवं छोटे पी.पी. स्वामी के मार्गदर्शन में राणीप श्री स्वामिनारायण मंदिर का २५ वाँ वर्ष पूर्ण होने से ता. २०-२-१० से २४-२-१० तक रजत जयंती महोत्सव धूमधाम के साथ मनाया गया था। इसके उपलक्ष्य में श्रीमद् सत्संगिजीवन का पारायण शा.स्वा. रामकृष्णदासने किया था। प्रथम दिन पोथीयात्रा में हजारों हरिभक्त भाग लिये थे। दूसरे दिन सायंकाल कथा के बाद भव्य शोभायात्रा में प.पू. आचार्य महाराजश्री के साथ संत हरिभक्त विशाल संख्या में उपस्थित थे।

सायंकालीन सत्र में श्रीहरि के गादी अभिषेक की झलक दिखलाई गयी थी। चौथे दिन महिला वर्ग की गुरु प.पू.अ.सौ. गादीवाला महिलाओं को दर्शन का सुख दी थी। सायंकाल श्री नरनारायणदेव की प्रतिष्ठा का निरुपण किया गया था। पूर्णाहुति के प्रसंग पर प.पू. आचार्य महाराजश्री पधारकर विष्णुयाग की पूर्णाहुति किये थे। प.पू. लालजी महाराजश्री प.पू. आचार्य महाराजश्री के साथ मंदिर में पधारकर आरती किये थे।

प्रासंगिक सभा में स.गु. महंत शा.स्वा. हरिकृष्णदासजी, नारायणघाट के महंत स्वामी, छोटे पी.पी. स्वामी तीनो संतो की प्रेरणा से २०१०-११ का वर्ष श्री स्वामिनारायण म्युझियम उद्घाटन के अवसर पर श्रीहरि के छठे, सातवें, आठवें वंशज को रजत तुला द्वारा तोलने की उद्घोषणा करते ही वहाँ उपस्थित भक्तों ने १५० कि. रजत एकत्रित करदी थी। प.पू. आचार्य महाराजश्री का संकल्प है कि पूजा में रहने वाले ठाकुरजी को सुवर्ण से तोला जाय। यह शब्द सुनते ही वहाँ पर उपस्थित महिलाओं ने अपने शरीर के आभूषण ठाकुरजी को अर्पण करके प.पू. महाराजश्री की प्रसन्नता प्राप्त की थी। राणीप मंदिर के सदस्य तथा स्वयं सेवकोंने सुन्दर सेवा कार्य किया था। प.पू. आचार्य महाराजश्री सभी को हार्दिक आशीर्वाद दिये थे।

- शा. चैतन्यस्वरुपदास, कोटेश्वर

नवावाडज मंदिर में सुवर्ण जयंती महोत्सव सम्पन्न

श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री, प.पू. बड़े महाराजश्री के आशीर्वाद से तथा छोटे पी.पी. स्वामी की प्रेरणा से स्वामिनारायण मंदिर नवावाडज का ५० वर्ष पूर्ण होने से तथा बहनों के मंदिर में प्रतिष्ठा के उपलक्ष्य में ता. २१-३-१० से २५-३-१० तक सुवर्ण जयंती महोत्सव मनाया गया था।

सुवर्ण जयंती महोत्सव अन्तर्गत श्रीमद् सत्संगिजीवन पंचाह्न पारायण का भी आयोजन किया गया था। जिसके वक्ता थे शा.स्वा. रामकृष्णदासजी। त्रिदिनात्मक हरियाग महापूजा, ५१ घन्टे तक अखंड धुन, अभिषेक-अन्नकूट दर्शन रात्रि कार्यक्रम किये गये थे। बड़ी संख्या में हरिभक्त उपस्थित होकर प्रत्येक कार्यक्रमोका लाभ लिये थे। सुवर्ण जयंती के यजमान श्री भीखाभाई परमार थे। इसके अलांवा अन्य भक्त भी अपने तन, मन, धन से लगे रहे। चौथे दिन सायंकाल महाराजश्री की शोभायात्रा निकाली गयी थी। ऐसी शोभायात्रा भूतो न भविष्यति जैसी थी। प्रातः कालीन सत्र में प.पू. बड़े महाराजश्री भी पधारे थे। अंतिम दिन प.पू. आचार्य महाराजश्री संतो के साथ पधारे थे। श्री स्वामिनारायण म्युझियम के लिये बहुत सारे भक्तों ने अपनी आर्थिक सेवा की थी। शा.स्वा. हरिकृष्णदासजी तथा नारायणघाट के महंत स्वामी का शुभ संकल्प था कि लालजी महाराजश्री को सुवर्ण से तोला जाय। इस कार्य को भी वहां के भक्तों ने पूर्ण किया था। सभा संचालन छोटे पी.पी. स्वामीने किया था। साथ में स्वा. चैतन्यस्वरुपदासजी भी थे। - शा. चैतन्यस्वरुपदास

बालासिनोर में युवा शिबिर

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से २-५-१० रविवार को बालासिनोर देश, लुणावाडा तथा संतरामपुर एवं अन्य छ स्थानों के हरिभक्तों का स्नेह मिलन बालासिनोर में किया गया था । प्रत्येक गाँव के अग्रगण्य, मंडल के पदाधिकारी, प्रमुख इत्यादि नीचे के फोन पर संपर्क करे । ९९२५३६५६०९ शा. विश्वस्वरुपदास ।

ता. २०-१२-०९ को ली गयी श्री नरनारायणदेव धार्मिक परीक्षा का परिणाम

	कुल	पास	नपास	अनुपस्थित
बाल सत्संग	८५०	८०५	२०	२५
किशोर सत्संग	७२५	७०८	७	१०
परिचय सत्संग	६१०	५९६	६	८
प्रवीण सत्संग	१८	५	१०	३
	२२०३	२११५	४३	४६

कुल २८ केन्द्रो ने भाग लिया था ।

कुल परिणाम ९०.६%

प.पू. लालजी महाराजश्री उपरोक्त विद्यार्थियों के प्रगति हेतु हार्दिक आशीर्वाद देते हैं। इसके साथ प्रत्येक गांवो में नूतन केन्द्र खोलने का अनुरोधकरते हैं।- संचालक - देवाणी रणछोड़भाई बी.

ब्रह्मानंद स्वामी के खाण मंदिर में पाटोत्सव सम्पन्न

श्रीहरि के प्रिय साखा स.गु. ब्रह्मानदं स्वामी के जन्म स्थान खाण श्री स्वामिनारायण मंदिर में बिराजमान श्री राधाकृष्णदेव हरिकृष्ण महाराज का २४ वाँ पाटोत्सव फाल्गुन शुक्ल-७ को प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा महंत स्वा. ओमप्रकाशदासजी की प्रेरणा से धूमधाम से मनाया गया था । इस प्रसंग पर श्रीमद् भागवत दशम स्कन्धका त्रिदिनात्मक पारायण शा.स्वा. विश्वस्वरुपदासजी के वक्ता पद पर सम्पन्न हुआ था । फाल्गुन शुक्ल-७ को प्रातः ६-३० बजे प.पू. बड़े महाराजश्री के वरद् हाथों से ठाकुरजी का अभिषेक किया गया था । अभिषेक के बाद श्रृंगार आरती तथा अन्नकूट आरती प.पू. बड़े महाराजश्रीने उतारी थी ।

प्रासंगिक सभा में स्वा. जगतप्रकाशदासजी तथा उदयनभाई महाराजने श्रीजी महाराज की लीलाओं का सुंदर वर्णन किया था । अन्त में पू. बड़े महाराजश्रीने ब्रह्मानंद स्वामी की निष्ठा पर बल देते हुए कहा कि इस तरह की निष्ठा सभी को रखनी चाहिये । इस प्रसंग पर मूली के स्वा. लक्ष्मीप्रसादजी, स्वा. चन्द्रप्रकाशदासजी नारायणपुरा, अनिरुद्ध स्वामी, चन्दू भगत, धर्मेश भगत ने सेवा कार्य किया था। मूली के भरत भगतने सभा संचालन किया था । - कुलदीप भगत

हिंमतनगर में भव्य शिबिर

श्री ननारायणदेव पीठाधिपति प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की उपस्थिति में तथा ईडर के महंत स्वामी तथा हिंतनगर के महंत स्वामी के मार्गदर्शन में ता. २१-२-१० को साबरकांठा विस्तार में अहमदाबाद मंदिर के महंत शा.स्वा. हरिकृष्णदासजी शा.स्वा. निर्गुणदासजी, शा.स्वा. नारायणवल्लभदासजी तथा श्रीजी स्वामी इत्यादि संतो ने प्रेरक उपदेश दिये थे । प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री ने सभी को पूजा की विधिसमझायी थी ।

साबरकांठा ५५ गाँवो के नवयुवान एकत्रित थे । सभा संचालन स्वा. वासुदेवानंदने किया था । अंत में प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री का ३८ वां जन्मोत्सव इडर धाम में मनाने की उद्घोषणा की गयी थी । - पुजारी अजयप्रकाशदास

एप्रोच (बापुनगर) श्री स्वामिनारायण मंदिर का पंचम पाटोत्सव

प.पू.ध.धु. आचार्य महाजश्री की आज्ञा से तथा यहां के महंत स्वामी की प्रेरणा से मंदिर का पांचवाँ पाटोत्सव १६-२-१० से २२-२-१० तक धूमधाम के साथ मनाया गया था । इस प्रसंग पर ता. ३१-१-१० को प.पू. लालजी महाराजश्रीके सानिध्य में शाकोत्सव मनाया गया था । जिसमें करीब २००० जितने भक्त उपस्थित थे । रविवार को १००० सत्संगी युवक सायकल की रैली पर महोत्सव का प्रचार-प्रसार किये थे ।

श्रीमद् सत्संगिजीवन की कथा शा.स्वा. निर्गुणदासजी तथा शा.स्वा. विश्ववल्लभदासजी के वक्ता पद पर सम्पन्न हुई थी । प.पू. आचार्य महाराजश्री सभी को हार्दिक आशीर्वाद दिये थे । बहनों को दर्शन का सुख देने के लिये प.पू.अ.सौ. गादीवालाजी पधारी थी । पारायण के मुख्य यजमान श्री अनिलभाई केशुभाई जोगाणी, पाटोत्सव के यजमान श्री भीखाभाई झीणाभाई गजेरा थे । अन्योने भी सेवा का लाभ लिया था ।

- गोरधनभाई वी. सीतापरा

श्री स्वामिनारायण मंदिर बालासिनोर

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा भंडारी स्वामी की प्रेरणा से श्री स्वामिनारायण म्युझियम तथा श्री स्वामिनारायण मंदिर के १६९ वे पाटोत्सव के उपलक्ष्य में श्रीमद् सत्संगिजीवन सप्ताह पारायण स्वा. विश्वस्वरुपदासजी के वक्ता पद पर सम्पन्न हुआ । इस प्रसंग पर प.पू.ध.धु. आचार्य महरजश्री तथा प.पू. लालजी महाराजश्री, प.पू.अ.सौ. गादीवालाजी पू. श्रीराजा पधार कर आशीर्वाद का लाभ दी थी । पाटोत्सव के अवसर पर अहमदाबाद के महंत शा.स्वा. हरिकृष्णदासजी संत मंडल के साथ पधारे थे । प्रासंगिक सभा में महंत स्वामी, अखिलेश्वर स्वामी, वडताल के पी.पी. स्वामी,

हरिस्वरुपदासजी इत्यादि संतो ने प्रेरक प्रवचन किया था। स्वा. नीलकंठदासजी, रमेश भगत, कुलदीप भगत ने उत्तम सेवा की थी। ब्रह्मस्वरुपदासने सभा संचालन किया था।

-मित प्रेम काछिया

उवारसद श्री स्वामिनारायण मंदिर

श्रीहरि के प्रसादी के उवारसद गाँव में प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से फाल्गुन शुक्ल-४ ता. १८-२-१० गुरुवार को प.पू. बडे महाराजश्री के शुभ वरद् हाथों से बहनो के श्री स्वामिनारायण मंदिर की खात पूजा की गई थी। इस प्रसंग पर कोठारी बाबूभाई बोधाभाई पटेल तथा घनश्याम भाई पटेल श्री गोरधनभाई, श्री ईश्वरभाई, श्री नाथाभाई इत्यादि हरिभक्तोंने प.पू. बड़े महाराजश्री का पूजन अर्चन किया था। इस प्रसंग पर शा.स्वा. नारायणवल्लभदासजी, शा.स्वा. प्रेमस्वरुपदासजी, सत्संगिभूषणदासजी, विश्वस्वरुपदासजीने प्रासंगिक प्रवचन किये थे। स्वा. हरिप्रकाशदासजीने प.पू. बड़े महाराजश्री का पुष्पहार से स्वागत किया था। प.पू. बड़े महाराजश्रीने समस्त सभा को हार्दिक आशीर्वाद दिया था। सभा संचालन शा.स्वा. नारायणवल्लभदासने किया था।

- पटेल घनश्यामभाई

श्री स्वामिनारायण मंदिर घाटलोडिया

घाटलोडिया श्री स्वामिनारायण मंदिर का तृतीय वार्षिक पाटोत्सव प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से संपन्न हुआ।

इस प्रसंग पर ता. २१-२-१० रविवार को प्रातः ९-३० से ११-३० तक महापूजा का सुन्दर आयोजन किया गया था।

ता. २१-२-१० के सायंकाल ८-३० से १०-३० तक सत्संग सभा में सत्यस्वरुपदासजी तथा सुव्रतदासजीने कथा का लाभ दिया था। ता. २२-२-१० रात्रि में ८-३० से १०-१० तक स्वा. निर्गुणदासजीने कथा का रसपान कराया था। ता. २४-२-१० को प्रातः ७-०० बजे ठाकुरजी का अभिषेक प.पू. बड़े महाराजश्री के वरद् हाथों संपन्न हुआ था। बाद में यजमान के घर पदार्पण करके सभा में पधारे थे। यजमान परिवार ने प.पू. बड़े महाराजश्री का पुष्पहार से स्वागत किया था। प्रासंगिक सभा में शा. हरिकेशवदासजीने प्रेरणात्मक प्रवचन किया था। रघुवीर स्वामी, हरिजीवन स्वामीने भी प्रेरक प्रवचन किया था। इस प्रसंग पर अहमदाबाद के महंत स्वामी, नारायणघाट, ईडर, टोरडा इत्यादि मंदिरों के महंत स्वामी अपनी अमृत वाणी का लाभ दिये थे। अन्त में प.पू. महाराजश्री ने हार्दिक आशीर्वाद दिया था।

- प्रवीणभाई टी. पटेल

श्री स्वामिनारायण मंदिर कुहा पाटोत्सव

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री तथा प.पू. बड़े महाराजश्री के आशीर्वाद से तथा कांकरिया मंदिर के महंत स्वामी की प्रेरणा से कुहा श्री स्वामिनारायण मंदिर का वार्षिक पाटोत्सव स्वा. हरिगोविंददासजी की स्मृति में को. शा. यज्ञप्रकाशदासजी के वक्तापद पर श्रीमद् भागवत कथा का आयोजन किया गया था। प्रथम दिन प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री जब पधारे उस समय शोभायात्रा निकाली गयी थी। कथा का आरंभ महाराजश्री के हाथो हुआ। यजमानश्री ने प.पू. महाराजश्री का पूजन अर्चन किया था। पू. महाराजश्रीने सभी को हार्दिक आशीर्वाद दिया था।

प.पू. महाराजश्री के साथ अहमदाबाद से शा.स्वा. निर्गुणदासजी, जेतलपुर से पी.पी. स्वामी पधारे थे। ठाकुरजी का पाटोत्सव प.पू. बड़े महाराजश्री के वरद् हाथों से संपन्न हुआ था। बाद में कथा की पूर्णाहुति हुई थी। समस्त कुहा गाँव के सत्संग समाज ने प.पू. बड़े महाराजश्री को श्री स्वामिनारायण म्युझियम के लिये श्री नरनारायणदेव की प्रसादी का दरवाजा भेंट किया था। प.पू. बड़े महाराजश्री के साथ पू. महंत स्वामी भी पधारे थे। बहनों को दर्शन का लाभ देने के लिये प.पू.अ.सौ. गादीवालाजी पधारी थी।

इस प्रसंग में अशोकभाई पटेल, प्रकाशभाई पटेल अरुणभाई पटेल, पिनलभाई पटेल तथा अन्य युवक उवतियों की सेवा प्रेरणादायी थी।

- श्री न.ना.यु.मं. कुहा

श्री स्वामिनारायण मंदिर बालवा

यहाँ के श्री स्वामिनारायण मंदिर में प.पू. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से नव वर्ष से बाल घनश्याम मंडल चल रहा है। जिसमें सायंकालीन आरती में करीब ५०-६० बालक प्रतिदिन उपस्थित रहते हैं। बालकों को कथा तथा धर्मकुल के माहात्म्य को समझाया जाता है। अवकाश के समय धार्मिक प्रवास, रमतोत्सव, रासोत्सव, इत्यादि कार्य क्रम किया जाता है। इस प्रवृत्ति में श्री नारायणभाई, श्री राजूभाई धर्म सम्बन्धिज्ञान देते हैं। प.पू. लालजी महाराजश्री बाल मंडल को खूब प्रेरणा देते रहते हैं।

- रवि सी. चौधरी, बालवा

श्री नरनारायणदेव के सानिध्य में पुरुषोत्तम मास भव्यता से मनाया जायेगा

अधिक वैशाख मास शुक्ल-१ ता. १५-४-१० से अधिक वैशाख कृष्ण अमावास्या १४-५-१० तक सर्वोपरि श्री नरनारायणदेव के सानिध्य में प.पू. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से सम्पूर्ण मास पर्यन्त धार्मिक वार्षिक उत्सवों को धूमधाम से मनाया जायेगा। अधिक मास में उत्सवों के यजमान बनने वाले भक्त कोठार की आफिस में कोठारी को मिले।

श्री स्वामिनारायण मंदिर धरियावद (राज.)

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से यहाँ के श्री

स्वामिनारायण मंदिर में रामनवमी के दिन सर्वोपरि श्री स्वामिनारायण भगवान का प्रागट्योत्सव धूमधाम से मनाया गया था । दोपहर १२-०० बजे श्री रामचन्द्र भगवान का जन्मोत्सव की आरती की गयी थी । रात्रि में १०-१० बजे श्रीहरि का प्रागट्योत्सव मनाया गया था । ब्र. हरिस्वरुपानंदजी की प्रेरणा से गौरांग भगत तथा मंथन भगतने सेवा की थी ।

- अर्जुनसिंह पवार

मूली प्रदेश का सत्संग समाचार

लक्ष्मीनगर (ता. मोरबी) मूर्ति प्रतिष्ठा

श्री स्वामिनारायण भगवान की कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से गोपालचरणदासजी की प्रेरणा से तथा उनके शिष्य सूर्यप्रकाशदासजी द्वारा निर्मित नूतन श्री स्वामिनारायण मंदिर लक्ष्मीनगर में मूर्ति प्रतिष्ठा धूमधाम से सम्पन्न हुई ।

ता. ५-२-१० को ठाकुरजी की नगर यात्रा तथा ६-२-१० को प.पू. आचार्य महाराजश्री की शोभायात्रा में नगरजन जुड़े हुये थे । प.पू. आचार्य महाराजश्री के वरद् हाथों से ठाकुरजी की, श्री गणेश भगवान की, श्री हनुमानजी महाराज की, मूर्ति प्रतिष्ठा की गयी थी ।

प्रासंगिक सभा में कथा के यजमान तलशीभाई तथा अधारा के परिवार थे । मुख्य यजमान श्री वीरेशभाई पुरुषोत्तमभाई पटेल (यु.एस.ए.) प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री का पूजन करके आरती उतारकर आशीर्वाद प्राप्त किये थे ।

सभा संचालन स्वा. कृष्णवल्लभदासजीने किया था ।

नारायणघाट मंदिर के महंत पी.पी. स्वामी, हलवद ध्रांगध्रा इत्यादि स्थलों से संत पधारकर प्रासंगिक सभा में उद्बोधन किये थे । नारायणघाट के महंत स्वामी, को. जे.के. स्वामी, बाल स्वरुप स्वामी, दास स्वामी, जे.पी. स्वामी इत्यादि संत पधारे थे । घनश्याम स्वामी कृष्णवल्लभ स्वामी, जे.के. स्वामीने व्यवस्था सम्पादन किया था ।

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री ने सभी भक्तों को मंदिर में प्रतिदिन दर्शन करने की आज्ञा की थी । इस प्रसंग पर देश-विदेश के हरिभक्त सेवा का लाभ लिये थे ।

कथा के वक्ता शा.स्वा. सूर्यप्रकाशदासजी तथा संहिता पाठ के बाल स्वरुप स्वामीने सुन्दर लाभ दिया था । मोरबी के सां.यो. राजकुंवरबा तथा उषाबा ने भी सुंदर सेवा की थी ।

- कोठारीश्री

श्री स्वामिनारायण मंदिर रंगपर (ता. मोरबी)

मूली श्री राधाकृष्णदेव देश के रंगपर श्री स्वामिनारायण मंदिर में प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से फाल्गुन कृष्ण-६ ता. ६-३-२०१० को ठाकुरजी के पाटोत्सव प्रसंग पर स्वा. सूर्यप्रकाशदासजीने श्रीहरिकृष्ण महाराज का अभिषेक करके आरती उतारी थी ।

हरिद्वार मंदिर के महंत स्वामी श्यामसुंदरदासजीने टेलीफोन द्वारा आशीर्वाद दिया था । मोरबी से सां.यो. राजकुंवरबा तथा उषाबा पधारी थी । मूली से जयप्रकाश स्वामी, जे.के. स्वामीने सुंदर व्यवस्था की थी । इस प्रसंग पर मोरबी, जेतपुर तथा चराडवा के हरिभक्त सेवा किये थे ।

- प्राणजीवन एम. माकासणा

भुज प्रदेश का सत्संग समाचार

श्री स्वामिनारायण मंदिर भुज के नूतन मंदिर महोत्सव के उपलक्ष्य में मेडिकल केम्प सम्पन्न

भुज श्री स्वामिनारायण मंदिर की तरफ से प.पू.ध.धु. आचार्य महाराज श्री की आज्ञा से तथा भुज के महंत स्वामी की प्रेरणा से श्री नरनारायणदेव नूतन मंदिर महोत्सव के उपक्रम में श्री नरनारायणदेव मेडीकल केम्प श्री कच्छी लेउवा पटेल एज्युकेशन एन्ड मेडिकल ट्रस्ट संचालित मातुश्री मेघबाई प्रेमजी जेठा होस्पिटल तथा रिसर्च सेन्टर भुज के सहयोग से सर्वरोग निदान केम्प का आयोजन किया गया था । स्पोन्सर भी लोग बने थे ।

(१) नखत्राणा ता. २०-१२-०९ श्री देवाशिष होस्पिटल स्पोन्सर श्री क.स. स्वा. मंदिर मोम्बासा ।

(२) दयापर ता. ३१-१-१० श्री प्रेमजी मूलजी विद्यालय स्पोन्सर - श्री स्वामिनारायण मंदिर भुज (कच्छ)

(३) कोठारा ता. २४-१-१० सेठ जी.टी. हाईस्कुल - स्पोन्सर विजय कन्स्ट्रक्शन एन्ड स्टाफ सिसल्स ।

(४) मांडवी ता. १४-२-१० श्री स्वामिनारायण संस्कारधाम स्पोन्सर ई. आफ्रिका श्री स्वामिनारायण मंदिर नाईरोबी ।

(५) दुधई ता. ७-३-१० श्री सरदार पटेल हाईस्कुल स्पोन्सर : **Elecamc : Plumbing Supplies U.K., and Baladia Medical Group of Frinend U.K.**

(६) रापर ता. २८-३-१० श्री लेवा पटेल कन्या छात्रालय स्पोन्सर - श्री कच्छ वागड लेवा पाटीदार समाज - मुंबई।

भुज ता. १६-५-१० श्री कच्छी लेवा पटेल एज्युकेशन एन्ड मेडीकल ट्रस्ट संचालित मातुश्री मेधबाई प्रेमजी जेठा होस्पिटल तथा रिसर्च सेन्टर भुज में तैयार होगा । जिसके स्पोन्सर कानजी भीमजी राधवजी एन्ड सेन्स नाईरोबी, ब्लु ग्रुप यु.के. देवराजभाई हालारिया एन्ड सन्स तथा श्री कच्छ लेवा पटेल कोम्युनिटी यु.के. स्पोन्सर थे । गांधीधाम केम्प में केशवजी प्रेमजी भूडिया तथा कानजी भूडिया स्पोन्सर थे।

उपरोक्त केम्प में हृदय से सम्बन्धित आपरेशन किया गया था । कुल २०००० जितने रोगी लाभ लिये थे । इस सुन्दर सेवा में स्वा. प्रेमप्रकाशदासजी, को. जादवजी भगत, स्वा. बालकृष्णदासजी, कानजी, भीमजी जेसाणी, रामजी देवजी वेकरिया, अरजणभाई गांगजीभाई पिंडोरिया भाग लिये थे । कच्छ में ऐसे दानवीर श्रद्धालु भक्त हृदय का आपरेशन, बाल्व का आपरेशन, एन्जीयोग्रोफी इत्यादि के लिये बहुत बड़ा हास्पिटल बनाकर लोकजीवन को नई दिशा दिये हैं । प.पू. आचार्य महाराजश्री तथा प.पू. बड़े महाराजश्री ने ऐसे पवित्र कार्य की प्रशंसा करते हुये आशीर्वाद दिये हैं । इस कार्य में भुज के संतो की प्रेरणा प्रशन्सास्पद है ।उपरोक्त केम्प में हृदय से सम्बन्धित आपरेशन किया गया था । कुल २०००० जितने रोगी लाभ लिये थे । इस सुन्दर सेवा में स्वा. प्रेमप्रकाशदासजी, को. जादवजी भगत, स्वा. बालकृष्णदासजी, कानजी, भीमजी जेसाणी, रामजी देवजी वेकरिया, अरजणभाई गांगजीभाई पिंडोरिया भाग लिये थे । कच्छ में ऐसे दानवीर श्रद्धालु भक्त हृदय का आपरेशन, बाल्व का आपरेशन, एन्जीयोग्रोफी इत्यादि के लिये बहुत बड़ा हास्पिटल बनाकर लोकजीवन को नई दिशा दिये हैं । प.पू. आचार्य महाराजश्री तथा प.पू. बड़े महाराजश्री ने ऐसे पवित्र कार्य की प्रशंसा करते हुये आशीर्वाद दिये हैं । इस कार्य में भुज के संतो की प्रेरणा प्रसन्शास्पद है।

विदेश सत्संग समाचार

कोलोनिया (अमेरिका) श्री स्वामिनारायण मंदिर

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से यहाँ के मंदिर में शिवरात्री महोत्सव स्वा. धर्मवल्लभदासजी तथा हरिनंदन स्वामी की प्रेरणा से सम्पन्न हुआ । पू. बिन्दुराजा, श्री सुव्रतकुमार तथा सौम्यकुमार भी इस प्रसंग पर पधारे हुये थे । फूलदोलोत्सव ता. ६-३-१० को सायंकाल ५ से ८ तक हजारों हरिभक्तों की उपस्थिति में सम्पन्न हुआ था । इस प्रसंग पर पू. बिन्दुराजा, श्री सुव्रतकुमार, सौम्यकुमार दर्शन के लिये पधारे थे । इनका स्वागत बहनोंने किया था । सभा में शा.स्वा. धर्मवल्लभदासजी स्वा. हरिनंदनदासजी, स्वा. विश्वप्रकाशदाजीने श्री नरनारायण जयंती तथा फूलोदोलोत्सव की महिमा समझाई थी । इस चेप्टर के अनेकों हरिभक्त इस अवसर पर उपस्थित होकर अपने जीवन को धन्य बनाये थे। - प्रवीणभाई शाह

सिने मेन्सन मंदिर में फूलदोलोत्सव

यहाँ के श्री स्वामिनारायण मंदिर में सिनेमेन्सन (अमेरिका आई.एस.एस.ओ.) में प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा प.पू. बड़े महाराजश्री की उपस्थिति में ता. ८-३-१० को श्री नरनारायणदेव जयंती उत्सव धूमधाम से मनाया गया था।

इस प्रसंग पर प.पू. बड़े महाराजश्री की उपस्थिति में सा.स्वा. निर्गुणदासजीने श्री नरनारायणदेव की महिमा समझाई थी । कोलोनिया मंदिर के महंत स्वामी तथा विहोकन मंदिर के महंत स्वामी तथा यहाँ के महंत स्वामीने श्री स्वामिनारायण म्युझियम निर्माण तथा आगामी वर्ष में उसके उद्घाटन हेतु उद्घोषणा की थी । हरिभक्तों ने म्युझियम के लिये प.पू. बड़े महाराजश्री को दान भेंट देकर आशीर्वाद प्राप्त किया था । अंत में प.पू. बड़े महाराजश्रीने हार्दिक आशीर्वाद दिया था।

बाद में हिंडोले में बैठे महाप्रभु श्री नरनारायणदेव की आरती उतारी गयी थी । सभी भक्तों को म्युझियम की डी.वी.डी. दिखाई गयी थी । इस प्रसंग पर श्री राजुभाई (वडु) श्री नवीनभाई, श्री अरविंदभाई, श्री महेन्द्रभाई, श्री कांतिभाई, श्री जगदीशभाई, इत्यादि हरिभक्तोंने प.पू. बड़े महाराजश्री के दिव्य संकल्प म्युझियम निर्माण के लिये आर्थिक सेवा करके आशीर्वाद प्राप्त किया था । बाद में पू. महाराजश्री हरिभक्तों के घर पदार्पण करने पधारे थे। - शा. स्वा. विश्वप्रकाशदासज

शिकागो इटास्का श्री स्वामिनारायण मंदिर

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री, प.पू. बड़े महाराजश्री की आज्ञा से श्री स्वामिनारायण मंदिर शिकागो में सत्संग की प्रवृत्ति अच्छी चलती है।

यहाँ पर फरवरी महीने में शाकोत्सव तथा शिवरात्री का सुंदर आयोजन किया गया था । शा.स्वा. हरिप्रसाददासजी,

जे.पी. स्वामी की प्रेरणा से दोनो उत्सव बड़ी भव्यता से मनाये गये थे। सर्व प्रथम श्रीहरिने जिस तरह शाकोत्सव किया था उस माहात्म्य को स्वा. हरिप्रसाददासजीने समझाया था। भोजनालय में भोजन की सुंदर व्यवस्था की गयी थी। जिस में भंटा का साग, बजड़ी की रोटी - माखन, दही, छाछ इत्यटिद का भोग ठाकुरजी को भोग लगा कर हरिभक्तों को प्रसाद में दिया गया था। महाशिवरात्री को विष्णुभाई जोषी ने शिव पूजन तथा आरती की थी। शा. स्वामीने शिव पूजन का सुंदर महत्व समझाया था। जे.पी. स्वामीने उत्सव में सुन्दर मार्गदर्शन दिया था।

- वसंत त्रिवेदी

एल.ए. श्री स्वामिनारायण मंदिर (अमेरिका)

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से यहां के मंदिर लोस एन्जलस में सभी उत्सव धूमधाम से मनाये जाते हैं। शिवरात्री को भगवान के सिंहासन के समक्ष भोलेनाथ के रुप में श्री घनश्याम महाराज का स्वरुप बनाया गया था। स्वा. धर्मकिशोरदासजीकी प्रेरणा से हरिभक्तों ने रात्री में २ बजे तक अविरत सेवा की थी। शास्त्री स्वामीने शिव महिमा को समझाया था। हरिभक्त प्रेमजीभाई प्रत्येक उत्सव मे तन, मन, धन से सेवा करते हैं। इसी तरह अन्य हरिभक्त सेवा करते रहते हैं। यहाँ की युवक मंडली तथा युवती मंडली रात दिन सेवा करती रहती है। महंत स्वामीने शिवरात्री तथा श्री नरनारायण जयंती एवं घुलहटी-होली इत्यादि उत्सव धूमधाम से मनाया गया था। अपने मंदिर का वेबसाईट लाईव दर्शन का समीर, रोनक, सुमित, नीलकंठ, रसिक इत्यादि भक्तोंने लोन्च किया था। प.पू. आचार्य महाराजश्री की कृपा से प्रत्येक उत्सव धूमधाम से मनाया जाता है। बड़ी संख्या में हरिभक्त इसका लाभ लेते हैं।

- ईश्वरभाई चौधरी

श्री स्वामिनारायण मंदिर केनेडा टोरन्टो

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से श्री स्वामिनारायण मंदिर में मांघ शुक्ल-५ को श्री घनश्याम महाराज के सानिध्य में शिक्षापत्री जयंती के निमित्त शिक्षापत्री का पूजन तथा पठन किया गया था। जिसमें बहुत सारे भक्तजन उपस्थित थे।

शिक्षापत्री श्लोक ८४ की आज्ञानुसार अपने मंदिर में शिवरात्री के दिन ब्राह्मणोने शिवपूजन किया था। जिस के मुख्य यजमान श्री नैमिषभाई त्रिवेदी थे। दूसरे अन्य सह यजमान बनकर लाभ लिये थे। श्री नरनारायणदेव युवक मंडलशिक्षापत्री श्लोक ८४ की आज्ञानुसार अपने मंदिर में शिवरात्री के दिन ब्राह्मणोने शिवपूजन किया था। जिस के मुख्य यजमान श्री नैमिषभाई त्रिवेदी थे। दूसरे अन्य सह यजमान बनकर लाभ लिये थे।

- श्री नरनारायणदेव युवक मंडल

अक्षरनिवासी संत-हरिभक्तों को भावभीनी श्रध्धांजलि

अहमदाबाद : कालुपुर श्री स्वामिनारायण मंदिर - श्री जेठा भगत गुरु स.गु. गवैया स्वामी प्रभु जीवनदासजी (उम्र ९४ वर्ष) श्रीहरि का अखंड स्मरण करते हुये ता. १५-३-१० को अक्षरनिवासी हुये हैं।

नांदोल : श्री पुष्पाबहन जसुभाई पटेल ता. २१-२-१०श्रीहरि का अखंड स्मरण करती हुई ता. १५-३-१० को अक्षरनिवासिनी हुयी हैं।

जीरागढ (हालार) : श्री वेलजीभाई नरसीभाई राठोडा ता. ११-२-१० को श्रीहरि का अखंड स्मरण करते हुये अक्षरनिवासी हुये हैं।

धूलकोट (हालार) : श्री जेठा भगत बधुभाई चोटलिया ता. ३-२-१० को श्रीहरि का अखंड स्मरण करते हुये अक्षरनिवासी हुये हैं।

मोम्बासा (लूणावाडा) : श्री त्रिभोवन मुकटलाल दवे के बड़े भाई श्री गणेशप्रसाद मुगटलाल दवे श्रीहरि का अखंड स्मरण करते हुये अक्षरनिवासी हुये हैं।

संपादक, मुद्रक एवं प्रकाशक : महंत शास्त्री स्वामी हरिकृष्णदासजी द्वारा, श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर, अहमदाबाद के लिए श्री स्वामिनारायण प्रिन्टींग प्रेस, श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर, अहमदाबाद (गुजरात) पीन कोड-३८० ००१ से मुद्रित एवं श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर, अहमदाबाद(गुजरात) पीन कोड-३८० ००१ द्वारा प्रकाशित।

૧

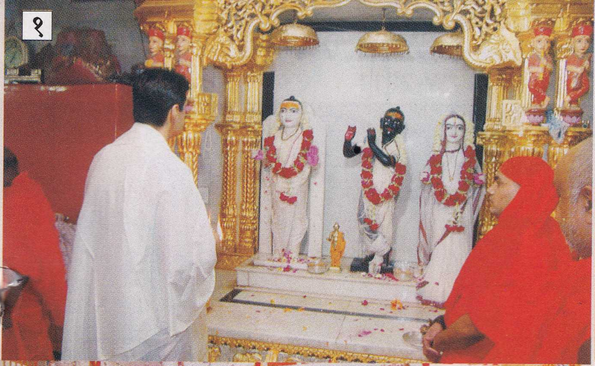

૨

૩

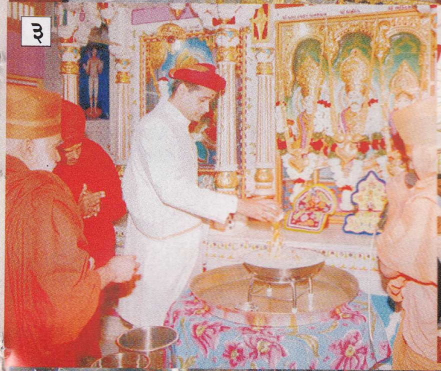

૪

૫

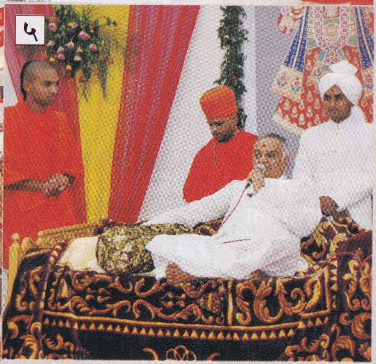

૬

૭

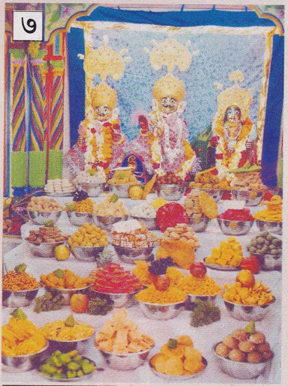

૮

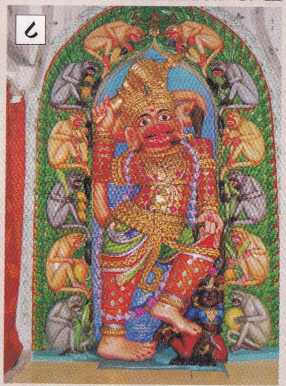

૯

૧૦

(१) कांकरिया मंदिर पाटोत्सव प्रसंग पर आरती उतारते हुये प.पू. महाराजश्री (२) कांकरिया मंदिर में पाटोत्सव तथा ब्रह्मभोज प्रसंग पर प.पू. बड़े महाराजश्री की उपस्थिति में आशीर्वाद देते हुये प.पू. महाराजश्री के साथ विधान सभा के अध्यक्ष श्री अशोक भट्ट (३) पाटडी (मूलीदेश) मंदिर में पाटोत्सव प्रसंग पर ठाकुरजी का अभिषेक करते हुये प.पू. महाराजश्री (४) नवावाडज मंदिर में विष्णुयाग की आरती उतारते हुये प.पू. बड़े महाराजश्री (५) राणीप मंदिर रजत जयंती पाटोत्सव प्रसंग पर आशीर्वाद देते हुये प.पू. बड़े महाराजश्री (६) बालासिनोर मंदिर में प.पू. महाराजश्री तथा प.पू. लालजी महाराजश्री की आरती उतारते हुये हरिभक्त (७) खाण मंदिर में पाटोत्सव प्रसंग पर अन्नकूट दर्शन (८) खाण मंदिर में आदि आचार्यश्री अयोध्याप्रसादजी महाराजश्री द्वारा प्रतिष्ठित कष्ट भंजनदेव का नविनीकरण के बाद दर्शन (९) समौ मंदिर में श्रीहरि प्रागट्योत्सव प्रसंग पर कीर्तन-भक्ति करते हुये हरिभक्त (१०) एप्रोच बापूनगर में श्री स्वामिनारायण म्युझियम के उपलक्ष्य में सत्संग सभा

Registered under RNI - No - GUJHIN/2007/20220 " Permitted to post at
Ahd PSO on 11 the every month under postal Regd. No. GUJ. 581 - 9-11
issued SSP Ahd Valid up to 31-12-2011

टोरेन्टो-केनेडा के प्रथम प्रवास मंडल पर अपने मंदिर में ठाकुरजी की आरती उतारते हुये प.पू. लालजी महाराजश्री

एल.ए. मंदिरमें श्री नरनारायणदेव जयंती प्रसंग में फुलदोलोत्सव के दर्शन

नवावाडज मंदिर में सुवर्ण जयंती पाटोत्सव प्रसंग पर ठाकुरजी की आरती उतारते हुये प.पू. आचार्य महाराजश्री तथा हरि के सातवें, आठवें वंशज की आरती उतारते हुये हरिभक्त

राणीप मंदिर रजत जयंती पाटोत्सव प्रसंग पर ठाकुरजी की आरती उतारते हुये तथा शोभायात्रा में दर्शन देते हुये प.पू. महाराजश्री साथ में पूजनीय संत

Museum Year
March 2010 - March 2011

Shree Swaminarayan Museum

ઈ.સ. ૨૦૧૦-૧૧નું વર્ષ "મ્યુઝિયમ વર્ષ"

પ.પૂ.ધ.ધુ. આચાર્ય મહારાજશ્રી ૧૦૦૮શ્રી કોશલેન્દ્રપ્રસાદજી મહારાજશ્રીની આજ્ઞાથી માર્ચ ૨૦૧૧નું વર્ષ "મ્યુઝિયમ વર્ષ" તરીકે જાહેર કરવામાં આવે છે.

ઉદ્‌ઘાટન ૮મી માર્ચ ૨૦૧૧

સંવત ૨૦૬૭ ફાગણસુદ ૩જીના શ્રી નરનારાયણ દેવનો પાટોત્સવ

www.swaminarayanmuseum.com/org

JAGADISH OFFSET

Praful Kharsani